SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 24 • ISSUE 11 • JANUARY 2026

हिन्दी मासिक

जनवरी 2026

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

इन्सानियत का पैग़ाम

पूरे देश के इस समय जो हालात हैं उनसे देश का ढाँचा आहिस्ता आहिस्ता कमज़ोर हो रहा है और अफ़सोस की बात यह है कि इतने लंबे चौड़े देश में बलन्द आवाज़ से इस वास्तविकता को बयान करने वाले भी नहीं, इस समय सारी ताक़त पैसे की है, हर चीज़ बेची जा सकती है और हर चीज़ ख़रीदी जा सकती है, मसअ़ला न हिन्दू का है न मुसलमान का, मसअ़ला सच्ची इन्सानियत और उन वास्तविक सिद्धान्तों का है जिनसे इन्सानियत का भरम क़ायम है।

मौलाना सय्यद बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी

एक प्रति ₹40/=

वार्षिक ₹400/=

सरपरस्त

हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक

मु0 गुफ़रान नदवी

उप सम्पादक

जमाल अहमद नदवी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

पोस्ट बॉक्स नं0 93

नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,

लखनऊ — 226007

समयः (8:00 am to 1:00 pm)

Whats'app & Call:

Mob. 9559844716

E-mail:sachcharahi@nadwa.in

https://sachcha-rahi.nadwa.in/

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 40/-
वार्षिक	₹ 400/-
विदेशों में (वार्षिक) 60 यु.एस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें

SACCHA RAHI

SACCHA RAHI

A/c. No. 10863759642

IFS Code: SBIN0000125

Swift Code: SBINNB157

State Bank of India,

Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई—मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक — लखनऊ

SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

जनवरी 2026 वर्ष 24 अंक 11

26 जनवरी

खुशियों का है प्याम यह 26 जनवरी।
जशने बहार लाई है 26 जनवरी।।
कुर्बानियों के बाद यह महफ़िल सजी है आज।
है यादे इंकलाब भी 26 जनवरी।।
सबको मिले सुकून, हो सबका भला यहाँ।
मुफलिस, गरीब सब की 26 जनवरी।।
हक अपना मांगना भी सिखाती है यह हमें।
जम्हूरियत की याद है 26 जनवरी।।
दंगा फसाद मुल्क का मामूल बन गया।
कैसे हो फख्र तुम पे ऐ 26 जनवरी।।
न अम्न देश में है,न इंसाफ है कहीं।
कहने को आज है यहां 26 जनवरी।।
हक़ बोलना भी अब तो गुनाहे अजीम है।
क्या इस लिए बनी थी यह 26 जनवरी।।
(मिस्बाहुद्दीन अंसारी मिस्बाह, गोरखपुर)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।

Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा..मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी 05

प्यारे नबी की प्यारी बातें..........................मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0 07

जनवरी 2026 ई0.......................................मुहम्मद गुफ़रान नदवी 09

समाज की बुराईयाँ....................................मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी 12

आशा की किरन..हज़रत मौ0सै0 अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 13

भारत का गणतंत्र.......................................डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी 17

भारत के अतीत में मुस्लिम.......................सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान 19

राष्ट्रगीत–वन्देमातरम.................................इं0 जावेद इक़बाल 21

साम्प्रदायिक हिंसा से देश व समाज.......मुहम्मद सलीम इंजीनियर 24

आपके प्रश्नों के उत्तर..............................मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी 26

ख़त्म न होने वाला सफर.........................सैय्यद सुफियान अहमद नदवी लखनवी 28

नई जनरेशन और मोबाइल कल्चर.........क़ारी मुहम्मद युसुफ़ अज़ीज़ी 31

अल्लाह के रसूल सल्ल0 और पड़ोसी....इदारा 34

बेटियाँ ख़ुदा की रहमत.............................अर्शिया रफ़ीक़ 35

भारतीय संविधान की विशेषतायें..............अशरफ़ अली नदवी 37

स्वास्थ्य..डॉ0 लोकेश के0 भारती 40

अंतर्राष्ट्रीय समाचार...................................अबू अब्दुर्रहमान नदवी 41

अहले ख़ैर हज़रात से................................इदारा 42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-बनी इस्राईलः-

अनुवादः—

शायद अब तुम्हारा पालनहार तुम पर दया कर दे और अगर तुमने फिर वही हरकत की तो हम फिर यही सजा देंगे और हमने दोज़ख को काफ़िरों के लिए जेल बनाया है[1](8) बेशक यह कुरआन उस रास्ते पर ले जाता है जो बिल्कुल सीधा है और उन ईमान वालों को जो नेक काम करते हैं बड़े बदले की खुशखबरी देता है(9) और जो आख़िरत को नहीं मानते उनके लिए हमने बड़ा दुखद अज़ाब तैयार कर रखा है(10) और इंसान बुराई उस तरह मांगता है जिस तरह भलाई मांगता है और इन्सान बड़ा ही जल्दी मचाने वाला है[2](11) और हमने रात और दिन को दो निशानियों के रूप में रखा है बस रात की निशानी को हमने प्रकाशहीन कर दिया और दिन की निशानी को रौशन बनाया है ताकि तुम अपने पालनहार की कृपा (फ़ज़्ल) तलाश करो और सालों की संख्या और हिसाब जान लो और हर हर चीज़ हमने पूरी तरह खोल दी है[3](12) और हर इंसान के कर्मों को हमने उसकी गर्दन में लगा दिया है और क़यामत के दिन हम उसको एक लिखित रूप में निकाल कर उसके सामने कर देंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा[4](13) अपना आमाल नामा (कर्म—पत्र) खुद ही पढ़ आज अपना हिसाब लेने के लिए तू खुद ही काफी है(14) जिसने सीधे रास्ते को अपनाया तो वह अपने लिए अपनाया और जो गुमराह हुआ तो अपने ही बुरे के लिए गुमराह हुआ और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा और हम उस समय तक अज़ाब नहीं देते जब तक कोई रसूल न भेज दें(15) और जब हमने किसी बस्ती को बर्बाद कर देने का इरादा किया तो वहाँ के ऐश करने वालों को आदेश दिये तो उन्होंने उसमें नाफरमानी (अवज्ञा) की तब बात उन पर पूरी हो गई बस हमने उसको तबाह व बर्बाद कर डाला(16) और नूह के बाद हमने कितनी ही नस्लें बर्बाद कर दीं और आपका पालनहार अपने बन्दों के गुनाहों की ख़ूब ख़बर रखने, देखने के लिए काफी है(17) जो भी दुनिया चाहता है तो हम उसमें से जो चाहते हैं जिसके लिए चाहते हैं तत्काल उसको दे देते हैं फिर हमने उसके लिए दोज़ख तय कर रखी है जिसमें वह अपमानित होकर घुस जाएगा(18) और जिसने आख़िरत को चाहा और उसने ईमान के साथ उसके लिए जो प्रयास करना चाहिए उसके अनुसार प्रयास किया तो ऐसे लोगों का प्रयास निश्चित रूप से ठिकाने लगा है(19) हम सबको इनको भी और उनको भी आपके पालनहार की देन (बख्शिश) में से भर भर कर देते रहते हैं और आपके पालनहार की देन (बख्शिश) पर कोई रोक नहीं है[5](20) देखिए कैसे हमने उनमें से कुछ को कुछ पर बड़ाई दी और आख़िरत के दर्जे तो बहुत बड़े हैं और फज़ीलत (श्रेष्टता) में वे बहुत बढ़ कर हैं[6](21) अल्लाह के साथ किसी को साझी मत ठहराइए वरना तिरस्कृत और बेबस होकर बैठे रहेंगे(22) और आपके पालनहार का यह फैसला है कि तुम सब सिर्फ उसी की बन्दगी करो और माँ—बाप के साथ अच्छा व्यवहार (करो) अगर तुम्हारे पास उन

दोनों में से कोई एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जाएं तो उनसे ''उफ'' भी मत करना और न ही उनको झिड़कना और उन दोनों से आदर के साथ बात करना(23) और उन दोनों के सामने पूरी की पूरी कृपा बन कर नर्मी के साथ झुके रहना और दुआ करते रहना कि ऐ हमारे पालनहार! इन दोनों पर कृपा कर जैसे इन्होंने बचपन में हमें पाला(24) तुम्हारे दिलों में जो भी है उससे तुम्हारा पालनहार खूब अवगत है अगर तुम नेक हो तो वह भी रुजू करने (पलटने) वालों को बहुत मॉफ करता है(25) और नातेदार को उसका अधिकार देते रहें और निर्धन और यात्री को भी और ग़लत काम में बिल्कुल खर्च न करें(26) निश्चित रूप से फुजूलख़र्ची करने वाले तो शैतान ही के भाई–बंधु हैं और शैतान अपने पालनहार का नाशुक्रा (कृतघ्न) है(27) और अगर कभी आपको उनसे कतराना पड़े जबकि आपको अपने पालनहार की कृपा की तलाश हो जिसके आप आशावान भी हों तो आप उनसे नर्म बात कह दें[7](28) और न ही अपने हाथ को अपनी गर्दन में जकड़ कर रखें और न उसको पूरी तरह खोल ही दें कि आपको निन्दा और अभिलाषा के साथ बैठ रहना पड़े(29)

तफ़सीर (व्याख्या):–

1. हज़रत मूसा अलै0 की शरीअ़त (धर्म शास्त्र) को न मानकर पहले विनाश का शिकार हुए फिर हजरत ईसा के साथ बुरा व्यवहार करके दूसरा विनाश उनका भाग्य बना, अब यह तीसरा चरण है, अल्लाह के अंतिम पैगम्बर आ चुके है अगर तुम मान लोगे तो तुम पर अल्लाह की कृपा होगी और न मानने के परिणाम स्वरूप फिर तुम्हारा वही अंजाम होगा जो पहले दो बार हो चुका है, बस इस कुरआन को मानो जो सच्चे और सीधे रास्ते की ओर बुलाता है।

2. काफिर कहते थे कि हमारे कुफ्र पर अजाब (दण्ड) आना है तो आ ही जाए यह उनकी इसी बात की ओर संकेत है कि यह लोग जल्दी में अजाब (दण्ड) की बुराई को इस प्रकार मांग रहे हैं कि जैसे अच्छी चीज़ मांगी जाती है।

3. रात और दिन का क्रम अल्लाह की कुदरत और रहमत की बड़ी निशानियों में है, रात अल्लाह ने आराम के लिए बनाई और दिन काम के लिए।

4. यानी हर व्यक्ति के काम उसके नाम–ए–आमाल (कर्म–पत्र) में सुरक्षित किये जा रहे हैं, क़यामत में सब खुला हुआ सामने होगा।

5. यह दोनों प्रकार के लोगों का उल्लेख है, अल्लाह की दया–कृपा दुनिया में सब बन्दों के साथ है हाँ! आख़िरत में वह केवल ईमान वालों के साथ होगी।

6. दुनिया में कोई धनी है. कोई निर्धन, कोई पढ़ा–लिखा है, कोई जाहिल, एक को दूसरे पर बड़ाई प्राप्त है लेकिन आखिरत की बड़ाई और प्रतिष्ठा बहुत बढ़ कर है।

7. यानी अगर ज़रूरतमंद को कुछ देने से इसलिए इनकार करना पड़े कि उस समय आप के पास कुछ न हो लेकिन उम्मीद हो कि आगे अल्लाह तआला अपनी कृपा से ज़्यादा माल प्रदान कर देंगे तो ऐसी हालत में उस जरूरतमंद से नर्म अन्दाज में माफी मांग लें।

8. उनको संबोधित करके पूरी उम्मत (सम्प्रदाय) को आदेश दिये जा रहे हैं केवल अल्लाह की बन्दगी, माँ–बाप के साथ अच्छा व्यवहार, हर हक़ वाले को उसका हक़ अदा करना, खर्च करने में संतुलन और बीच का रास्ता अपनाना, न ही आदमी ऐसा कंजूस बन जाए कि कुछ निकलना ही कठिन हो और न ही ऐसा हाथ खोल दे कि बाद में पछताना पड़े।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

इबादत व ताअत में ऐतदाल:- जितना वश में हो उतना ही करना चाहिए:—

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 तशरीफ़ लाए और उस समय उनके (हज़रत आइशा) के पास एक औरत मौजूद थी, आप सल्ल0 ने पूछा यह कौन हैं? हज़रत आइशा ने कहा यह फुलाँ औरत है, जिनकी नमाज़ों का चर्चा हो रहा है, (यानी यह कि वे बहुत नमाज़ें पढ़ती हैं) आप सल्ल0 ने फरमाया तुम ऐसा न करो, तुम उतना करो जितना कर सकते हो, अल्लाह तआला बदला देने से नहीं उकताएगा, तुम इबादत से उकता जाओगे। अल्लाह को वही दीनदारी पसन्द है जो हमेशा हो।

(बुखारी व मुस्लिम)

नींद की हालत में नमाज न पढ़े:—

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया: जब तुम में से किसी को नमाज़ पढ़ने में नींद आने लगे तो सो जाए, यहाँ तक कि नींद ख़त्म हो जाए (तब नमाज़ पढ़े), अगर तुममें से किसी ने नींद की हालत में नमाज़ पढ़ी तो क्या मालूम कि अल्लाह से माफी मांगना शुरू करे और नींद के कारण अपने को ही बुरा—भला कह बैठे।

(बुखारी व मुस्लिम)

गुलू (अतिकर्म) से दूरी:—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— दीन (धर्म) आसान है, जो आदमी भी दीन में सख़्ती करेगा, दीन उस पर हावी हो जाएगा और उसका गुलू (अतिकर्म) चल न सकेगा, मतलब यह कि वह हिम्मत हार कर बैठ जाएगा। तुम ठीक रास्ते पर उसके करीब चलते रहो, बदले की खुशखबरी (अच्छे अमल) पर हासिल करो, सुबह व शाम और रात के कुछ हिस्से में (जो चुस्ती के समय होते हैं) इबादत करो।

(बुखारी)

कुरआन मजीद क़यामत में सिफारिश करेगा:—

हज़रत अबू उमामा रज़ि0 से रियायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया:— कुरआन पढ़ा करो, यह क़यामत के दिन अपने पढ़ने वालों की सिफारिश और अनुशंसा करेगा।

(मुस्लिम)

अटक—अटक कर पढ़ने वालों के लिए दोहरा सवाब:—

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— जो आदमी कुरआन को समझकर पढ़ता है तो वह आला और उच्च श्रेणी के सर्व सम्मानित फरिश्तों के साथ होगा। और जो अटक—अटक कर मुश्किल से पढ़ता है उसके लिए दो गुना अज्र और बदला है। (बुखारी व मुस्लिम)

मतलब यह है कि अल्लाह के जो बन्दे कुरआन को अल्लाह का कलाम मानते हुए उससे रुचि रखें और अधिक से अधिक उसकी तिलावत करें (पढ़ें) उनको नबियों, रसूलों और कुरआन को जिन फरिश्तों ने उठाए रखा है और इसकी रक्षा—सुरक्षा में लगे हैं, उनकी संगति नसीब होगी और जिन ईमान वाले बन्दों का हाल यह है कि जो कुरआन को तेजी से नहीं पढ़ सकते हों, बल्कि अटक अटक पढ़ते रहें उनको पढ़ने का बदला तो मिलेगा ही, साथ में कठिनाई का भी सवाब मिलेगा, इसलिए उनको अपनी इस स्थिति से निराश नहीं होना चाहिये।

(मआरिफुल हदीस)

कुरआन मजीद पढ़ने वाला मोमिनः—

हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— जो मोमिन कुरआन पढ़ता है, उसका उदाहरण तुरंज (एक प्रकार का ख़ुशबूदार मीठा नींबू होता है) की तरह है। उसकी ख़ुशबू भी अच्छी और स्वाद भी अच्छा। और जो मोमिन (ईमान वाला) कुरआन नहीं पढ़ता है उसका उदाहरण ख़ुजूर की तरह है कि उसमें ख़ुशबू (सुगन्ध) तो नहीं होती पर स्वाद अच्छा और मीठा होता है। और जो मुनाफ़िक (कपटाचारी) कुरआन शरीफ़ पढ़ता है, उसका उदाहरण रेहान (एक फल) की तरह है कि ख़ुशबू अच्छी स्वाद कड़वा। और जो मुनाफ़िक कुरआन नहीं पढ़ता है उसका उदाहरण हन्ज़लः (एक फूल) की तरह है स्वाद भी कड़वा और ख़ुशबू भी नहीं।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

रश्क़ का मौक़ाः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमायाः— रश्क सिर्फ़ दो मौकों पर सही है, एक उस आदमी पर रश्क सही है जिसको अल्लाह ने कलाम पाक का ज्ञान दिया हो और वह उसपर दिन—रात अमल करता हो। दूसरा उस आदमी पर जिसको अल्लाह ने धन— दौलत दिया हो और वह दिन—रात बेहतर तरीक़े पर अपनी दौलत को ख़र्च करता हो।

(बुखारी व मुस्लिम)

हुजूर (सल्ल0) की कुरआन पढ़ने की फरमाइशः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से रिवायत है कि मुझसे अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया— मुझे कुरआन पढ़कर सुनाओ, मैंने कहा—मैं आपको कुरआन पढ़ कर सुनाऊँ, आप ही पर तो कुरआन उतरा है। आप सल्ल0 ने फरमायाः मैं चाहता हूँ कि दूसरे की ज़बान से सुनूँ, मैंने सूरः निसा शुरू की और जब इस आयत पर पहुँचा ''फ कै फ इज़ा जिअ्ना मिं कुल्लि उम्मतिम बिशहीदि वॅ जिअ्ना बि क अला हाऊलाइ शहीदा''। (सूरः निसा—41) फरमाया— अब बस करो। मैंने आपको देखा तो आपके आंसू बह रहे थे। (बुखारी व मुस्लिम)

कुरआन पढ़ना—पढ़ाना और उसका जिक्ऱ करनाः—

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया जो लोग भी अल्लाह के घरों में से किसी घर में अल्लाह की किताब कुरआन शरीफ की तिलावत करते हैं (पढ़ते हैं) और आपस में एक दूसरे को उसकी शिक्षा—दीक्षा देते हैं तो उन पर सकीनत (शान्ति एवं परितुष्टि) उतरती है और रहमत (अल्लाह की दया और ख़ुशी) उनको ढ़ाँक लेती है। फरिश्ते उनको घेर लेते हैं और उनका जिक्र अल्लाह अपने दरबार में करता है। (मुस्लिम)

सूरः फातिहा का महत्वः—

हज़रत अबू सईद राफिज बिन मुअल्ला रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने मुझसे फरमाया कि मैं मस्जिद से निकलने से पहले तुमको कुरआन मजीद की बड़ी श्रेष्ठता वाली सूर सिखाऊँगा। फिर जब आप सल्ल0 ने मस्जिद से निकलने का इरादा किया तो मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल! आप सल्ल0 ने इरशाद फरमाया था कि मैं तुमको कुरआन मजीद की बड़ी सूरः सिखाऊँगा, आप सल्ल0 ने फरमाया ''अल्हम्दुलिल्लाहि रबिल आ लमीन'' यही सब्उलमसानी और कुरआन मजीद है जो मुझे दी गई है। (बुखारी)

1. सब्उल मसानी और कुरआन से तात्पर्य सूरः फातिहा है, यह ऐसी महान और बरकत व सम्पन्नता वाली सूर है कि इस तरह की कोई सूरः पहली आसमानी किताबों में नहीं उतरी, और कुरआन मजीद में भी इस दर्जे की कोई सूरः नहीं है। यह पूरे कुरआन पर हावी है, इसलिए इसको ''उम्मुल—कुरआन'' भी कहा जाता है, इसके अलावा इसके कई नाम आए हैं।

❖❖❖

जनवरी 2026 ई0

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

15वीं शताब्दी के प्रारम्भ से यूरोपियन महाद्वीप के शासकों ने भारत वर्ष को अपना निशाना बनाया, सबसे पहले वास्को डिगामा के नेतृत्व में 1486 ई0 में पुर्तगाली दक्षणी भारत के तट पर आये, गोवा उनकी यादगार है, पुर्तगालियों के बाद नीदरलैण्ड से 1664 ई0 में डच आये, फिर फ्रान्सीसियों और अंग्रेज़ों का आगमन हुआ, भारत वासियों को अपने देश की स्वतंत्रता के लिए लम्बा संघर्ष करना पड़ा, इस स्वतंत्रता को प्राप्त करने के लिए हज़ारों की संख्या में भारत वासियों ने अपनी जानों का बलिदान दिया, यदि आप स्वतंत्रता संग्राम के चिन्हों को अपनी आखों से देखना चाहते हैं तो लखनऊ के शहीद स्मारक, गोमती नदी के तट पर रेज़ीडेन्सी के दरो दीवार देखये, जहाँ भारतीय योद्धाओं ने अपनी बन्दूकों की गोलियों और तोपों के गोलों से रेज़ीडेन्सी को छलनी कर दिया वहां अंग्रेज़ रेज़ीडन्ट रहता था, जिसके साथ उसकी फ़ौजें थीं, जिन भारतियों ने लखनऊ की रेज़ीडेन्सी पर मोर्चा लिया उनमें फ़ैज़ाबाद के मौलाना अहमदुल्लाह शाह का नाम बहुत प्रसिद्ध है, जिनके सर पर अंग्रेज़ों ने उस समय पचास हज़ार रूपये का पुरस्कार रखा था।

हिन्दी इतिहासकारों ने मौलाना अहमदुल्लाह शाह को डंके वाले बाबा के नाम से याद किया है। मौलाना जब अपनी आज़ाद हिन्द फ़ौज के साथ चलते थे तो फ़ौज के आगे नक्क़ारा बजता था, हिन्दी भाषा में नक्क़ारे को डंका कहते हैं।

मौलाना एक कुशल सेनापति के रूप में सैन्य का संचालन करते, अंग्रेज़ उनसे बहुत भयभीत रहते, युद्ध क्षेत्र में उनका लोहा मानते, यहाँ पर हम अंग्रेज़ लेखकों की टिप्पड़ी प्रस्तुत करते हैं जो उन्होंने मौलाना के विषय में की हैंः–

रिचर्ड होम्ज़ लिखता हैः– ''मोलवी अलमदुल्लाह शाह उत्तरी भारत में अंग्रेज़ों का सबसे बड़ा दुश्मन था'', पंडित सुन्दर लाल लिखते हैं ''निःसंकोच दुनिया की आज़ादी के शहीदों में 1857 ई0 के मोलवी अहमदुल्लाह शाह का नाम सदेव के लिए सम्मान योग्य रहेगा''।

(सन् सत्तावन पृ0 2028)

अंग्रेज़ लेखक ''मालेसन'' मौलाना की वीरता और सैन्य योग्यता से प्रभावित हो कर लिखता हैः– ''मोलवी अहमदुल्लाह शाह एक बड़ा ही आश्चर्यजनक इन्सान था ग़दर के दिनों में सेनापति की हैसियत से उसकी योग्यता के बहुत से सबूत मिले, कोई भी दूसरा आदमी गर्व के साथ नहीं कह सकता था कि मैंने दो बार ''सरकालन कैम्पबिल'' को मैदान में पराजय किया'' *(History of Indian Mutiny Vol. IV Page-379)* में वही लेखक आगे लिखता हैः–

''अहमदुल्लाह शाह सच्चा देश भक्त था, उसने किसी निहत्थे का ख़ून बहा कर अपनी तलवार को नापाक नहीं किया, वीरता के साथ डट कर खुले मैदान में उन विदेशियों के साथ जंग की जिन्होंने उसके वतन को छीना था, हर देश के वीर और सच्चे लोगों को चाहिए कि मोलवी अहमदुल्लाह शाह को सम्मान के साथ याद रखें, *(History of Indian Mutiny Vol. IV Page-381)*

स्वतंत्रता संग्राम में हमारे पूर्वजों ने बड़ी वीरता और साहस के साथ संघर्ष किया जिसकी एक झलक मैंने आपके

सामने पेश की, कष्ट जनक बात यह है कि वर्तमान काल में हमारी नई पीढ़ी स्वतंत्रता संग्राम के विषय में कुछ नहीं जानती और न उनके पाठ्क्रम में कोई ऐसी पुस्तक है जिसको पढ़ कर वह स्वतंत्रता सेनानियों के कारनामों को जान सकें, एक आवश्यक बात ज़ेहन में रहनी चाहिए कि यह स्वतंत्रता संग्राम हिन्दू–मुस्लिम एकता के साथ चला था जिसके फलस्वरूप देश आज़ाद हुआ था, 15 अगस्त 1947 ई0 को हमारा देश भारत वर्ष आज़ाद हुआ जिसकी सूचना ब्रिटिश साम्राज्य ने अपने प्रतिनिधि अंतिम वासराए लार्ड माउन्ट बिटन द्वारा दी।

देश आज़ाद हुआ परन्तु देश के पास अपना कोई दस्तूर और संविधान नहीं था, भारत वर्ष जैसा विशाल देश जहां अनेकों धर्म, अनेकों रीति रवाज, भाषाएं और विभिन्न संस्कृतियाँ हों, वहां के संविधान की रचना बहुत महत्वपूर्ण काम था, देश के विद्वानों ने इस बड़े काम के लिए डॉ0 भीम राव अम्बेडकर का नाम पेश किया जिनके निर्देशन और संरक्षण में भारतीय संविधान की संरचना के लिए एक ड्राफ्टिंग कमेटी गठित की गई थी उसके चेयरमैन डॉ0 भीम राव अम्बेडकर साहब थे। और ड्राफ्टिंग कमेटी के 7 निम्नलिखित सम्मानीय सदस्य थे जिनके नाम यह हैं:–

1. डॉ0 भीम राव अम्बेडकर चेयरमैन
2. के0एम0 मुन्शी (भूतपूर्व गृह मंत्री मुम्बई)
3. एन0 गोपाल स्वामी (भूतपूर्व प्रधान मंत्री जम्मू कश्मीर) उस ज़माने में जम्मू कश्मीर के मुख्य मंत्री को प्रधान मंत्री कहा जाता था।
4. वी0एल0 मिश्र (भूतपूर्व एडवोकेट जनरल भारत वर्ष)

वी0एल0 मिश्र इस कमेटी से मुस्तअ़फ़ी हो गये और उनका इस्तिफ़ा स्वीकार होने के बाद उनकी जगह महाराजा बड़ौदा के लीगल एडवाइज़र ने ली।

5. मुहम्मद सअ़दुल्लाह (भूतपूर्व मुख्यमंत्री आसाम)
6. डी0पी0 खेतान (एडवोकेट) डी0पी0 खेतान के निधन के बाद उनकी जगह टी0टी0 कृष्णा चारी ने ली।
7. अल्लादी कृष्णा स्वामी अय्यर

संविधान सभा ने संविधान को अन्तिम रूप देने में 2 साल, 11 महीने, 17 दिन का समय लिया, इसकी तैयारी में विभिन्न खातों के अन्तर्गत 6 करोड़ 40 लाख की रक़म ख़र्च की गई, इस भारतीय संविधान को 26 नवम्बर को मन्ज़ूरी देदी गई और पूर्ण रूप से 26 जनवरी 1950 ई0 को लागू हुआ जिसके आधार पर इस तारीख़ को हम भारत वासी गणतंत्र दिवस मनाते हैं। संविधान के अनुसार हमारा देश एक प्रभुत्व समाजवादी, लोकतांत्रिक गणराज्य है, जहां देश के तमाम नागरिकों को बिना किसी विशेषता और भेदभाव के समाजी, आर्थिक और राजनैतिक न्याय प्राप्त है और समस्त लोगों को अपने विचार प्रकट करने और अपने अक़ीदे और दीन के अनुकूल इबादत करने का अधिकार प्राप्त है। इसके अलावा ज़िन्दगी के हर विभाग में सबको समानता का अवसर प्राप्त है, इसमें जाति और धर्म का कोई अन्तर नहीं है, जाति और धर्म के आधार पर हम किसी का अपमान नहीं कर सकते यदि हम ऐसा करते हैं तो हम क़ानून की नज़र में अपराधी हैं, इस समय हम 76वाँ गणतंत्र दिवस मना रहे हैं, दूसरे शब्दों में हम भारतीय संविधान की वर्ष गाँठ मनाते हैं। हम अपने हृदय से प्रश्न करें कि क्या हम अपने संविधान के प्रति वफ़ादार हैं? हमने तो ब्रिटिश सामराज्य की राजनीति को याद रखा है ''लड़ाओ और शासन करो'' हमने कभी नहीं सोचा कि हमारे

पूर्वजों ने, देश के विद्वानों ने कितने परिश्रम और सोच विचार के बाद संविधान की रचना की थी ताकि हमारा देश एक फुलवारी और बग़ीचे के समान हो जिसमें भांति भांति के रंगबिरंग फ़ूल हों, जिसकी वजह से अनेकता में एकता की शान पैदा हो, बहुत दुख के साथ कह रहा हूँ कि सीधी साधी जनता को अनावश्यक बातों में उलझा कर पथभ्रष्ट किया जा रहा है। किसी ने कहा है कि ''भीड़ की हिन्सा जारी है, शासन पर वह भारी है'' भय और आतंक का माहौल बना कर निर्दोष और मासूम लोगों को पकड़ कर जेलों में बन्द किया जा रहा है, महीनों और वर्षों बीत जाते हैं रिहाई का कोई रास्ता नहीं मिलता, ''लॉ एण्ड आर्डर'' का उचित पालन न होने की वजह से देश में जंगल राज का माहौल बनता जा रहा है, भारतीय संविधान के निर्माता डॉ0 भीम राव अम्बेडकर दलित परिवार से संबंधित थे जिसकी वजह से उनका बचपन बड़ी कठिनाईयों में गुज़रा और उनको बहुत अपमान जनक बातों का सामना करना पड़ा।

जब देश आज़ाद हो गया, डॉक्टर साहब की संरक्षता और निर्देश में भारतीय संविधान की रचना हुई तो उसकी प्रस्तावना में लिखा गया कि '' किसी भारतीय नागरिक के साथ उसके धर्म और जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं होगा सबके अधिकार एक समान हैं। किसी देश की उन्नति और विकास का रहस्य इस में हैं कि उस देश में शान्ति और भाईचारे का वातावरण बना रहे।

''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास'' यह बहुत सुन्दर और आकर्षित नारा है, परन्तु यह नारा खोखला है, व्यवहारिक जीवन पर इसका कोई प्रभाव नहीं, न्याय की कसौटी पर ये नारा पूरा नहीं उतरता, जब न्याय का समय आता है तो उत्पीड़ित का धर्म और जाति देखी जाती है, जिसके पीछे सामप्रदायिक्ता की भावना होती है, हम संविधान दिवस मनाते हैं और मीडिया द्वारा प्रोपैगण्डा करते हैं परन्तु उसके मौलिक सिद्धान्तों और मूल्यों की उपेक्षा करते हैं, जिसकी वजह से संविधान दिन प्रतिदिन कमज़ोर होता जा रहा है, भारतीय संविधान की पहचान, आज़ादी, परस्पर भाई चारा, धर्मनिर्पेक्षता, समाजवाद था, वह सब ख़्वाब–ख़्याल हो गया, हमारे शासक वर्ग ने अंग्रेज़ों का पढ़ाया हुआ पाठ याद रखा है ''लड़ाओ और शासन करो'' यह शासन प्रणाली न हमारे देश के हित में है और न देशवासियों के हित में है। इससे देश का निर्माण नहीं देश का विनाश होगा। हम निराश नहीं हैं अभी हमारे देश में मानवता जीवित है।

मानवता को जब भी आवाज़ दी जाएगी वह जागृत हो जायेगी, डॉक्टर अम्बेडकर और उनके साथियों ने जिस संविधान की रचना की थी यदि देश की शासन प्रणाली, और शासन व्यवस्था उस संविधान के अनुकूल चलाई जाए तो देश एक सूत्र में बंधा रहेगा, देश संगठित और मज़बूत होगा, प्रजातंत्र राज में एक ईमानदार और सत्यवादी विपक्षी दल का होना अति आवश्यक है। इस समय नेतागण में जो बीमारी फैल गई है वह स्वार्थ की बीमारी है। किसी को देश और देश वासियों की कोई परवाह नहीं, अपनी सत्ता और कुर्सी की सुरक्षा के लिए देश को मैदाने जंग में तबदील कर देते हैं, जो बहुत ही खेद जनक और कष्ट दायक बात है।

इस समय साधारण जनता महंगाई और बेरोजगारी से जूझ रही है बड़ी संख्या का हाल यह है कि रोज़ कुवाँ खोदना और

शेष पृष्ठ ....16....पर

पिछले अंक से आगे

समाज की बुराईयाँ और उनका इलाज

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

झूठा आरोपः-

झूठा आरोप भी जुबान का एक बड़ा गुनाह है, झूठा आरोप किसी पर लगाया जाए, जिस चीज का आरोप लगाया जाएगा, उसकी शिद्दत बढती जायेगी, बलात्कार का आरोप लगाया जाए, चोरी का आरोप लगाया जाए या किसी मामूली गलती को किसी से जोड़ दिया जाए, ये सब आरोप ही की किस्में हैं, और बड़े गुनाहों में से है, अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है–

अनुवादः– ***"और जिसने खुद गलती या गुनाह किया फिर उसको किसी बे गुनाह के सर थोप दिया तो उसने झूठा आरोप और बड़ा गुनाह अपने ऊपर लाद लिया।"***

(अल–निसाः112)

गीबत के बारे में एक हदीस में आता है कि अगर किसी की वो बुराई बयान की जाए जो उस में मौजूद है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब ही तो गीबत है वरना तो झूठा आरोप है।

(सहीह मुस्लिमः 6758)

आदमी किसी को जलील करने के लिए उस पर आरोप लगाता है, मगर भूल जाता है कि हदीस में यहाँ तक इरशाद फरमा दिया गया है कि अगर कोई किसी पर इलजाम लगाता है तो वो उस वक्त तक न मरेगा जब तक अल्लाह तआला उसको उस बुराई में लिप्त न कर दे।

(मुस्द अहमदः 5512)

कभी कोई किसी से नफ़रत करता है तो तहकीक नहीं करता, कोई भी उसके बारे में ग़लत बात कह दे तो उसको सच मान कर उसको फैलाना शुरू कर देता है, इस तरह वो भी झूठा आरोप लगाने में शरीक हो जाता है। झूठा आरोप किसी बुराई का भी लगाया जाए बड़ा गुनाह है, लेकिन अगर कोई किसी पर बलात्कार का आरोप लगाता है तो ये आखिरी दर्जे का गुनाह है, और शरीयत ने इसके लिए सजा निर्धारित की है, जिसको "कजफ की सजा" कहते हैं, इसमें सौ कोड़े उस शख़्स को लगाए जाएंगे जो बलात्कार का आरोप लगाएगा और उसका सबूत न पेश कर सकेगा, ये इसलिए है ताकि बुराइयाँ न फैलें, ये समाज को क्रप्ट कर देने वाली चीज़ है, अल्लाह तआला ने "कजफ की सजा" के जरिये उसका रास्ता ही बंद कर दिया। फिर बुराइयां फैलाने वालों, उनका चर्चा करने वालों के बारे में सख़्त अलफाज़ फरमाए–

अनुवादः– ***"यक़ीनन जो लोग ये चाहते हैं कि ईमान वालों में बे हयाई फैले, उनके लिए दुनिया व आख़िरत में दर्दनाक अजाब है।"***

(अल–नूरः 19)

खुलासा ये है कि जैसे गुनाह का आरोप लगाई जाएगी, गुनाह की सख़्ती बढ़ती जाएगी, और इसी तरह जिस पर आरोप लगाया जा रहा है, उससे भी गुनाह की सख्ती में इजाफ़ा होता है, अल्लाह के वलियों पर और उनसे बढ़ कर सहाबा पर इलजाम लगाना आखिरी दर्जे के फिस्क व फुजूर की बात है, फिर ईमान भी खतरे में पड़ जाता है, जिन मुनाफिकों ने हज़रत आयशा (रज़ि0) पर इलजाम लगाया, उनके बारे में कुरआन मजीद में "अजाबे अजीम" का जिक्र है, इरशाद हैः–

अनुवादः– ***"और उनमें जिसने बड़ा हिस्सा लिया उसके लिए बड़ा अजाब है।"***

(अल–नूरः 11)

❖❖❖

आशा की किरन

हज़रत मौ0 सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0

सज्जनों!

दुनिया का बनाने वाला, मानव जाति से निराश नहीं उसकी मेहरबानियां, उसकी दया दृष्टि उसके वरदान इस संसार पर बराबर बरस रहे हैं। सृष्टि की हर चीज मानव जाति के प्रति आशावान है।

लेकिन हमारा मामला एक दूसरे के साथ यह बताता है कि हम मानव से निराश हैं। किसी विचारक ने कहा है कि जो बच्चा इस दुनिया में आता है वह इस बात का ऐलान करता है कि ईश्वर मानव जाति से निराश नहीं। अगर निराश होता तो इस नस्ल में बढ़ोत्तरी न होती। वह इन्सान को अपनी किस्मत आजमाने इस दुनिया में न भेजता। लेकिन इन्सान इन्सान का गला काटता है, इन्सान इन्सान का शोषण करता है, जोक की तरह खून पीता है उसे ग्राहक समझकर फायदा उठाता है और अपने आचरण से इसका ऐलान करता है कि वह मानवता की क्षमताओं तथा उसके भविष्य से निराश है। ईश्वर और मनुष्य के यह प्रदर्शन बराबर जारी हैं। वर्षा का एक–एक बूंद इस बात का ऐलान करता है कि दुनिया का पैदा करने वाला अपनी प्यासी और अत्याचारी मानव जाति से अभी निराश नहीं है। धरती अंकुरण शक्ति रखती है, उसकी पैदावार इस बात का ऐलान है कि ईश्वर इस धरती के रहने वालों से निराश नहीं। सूरज चमकता है, वहाँ कोई हड़ताल नहीं, चाँद बराबर निकलता है और अपनी चान्दनी की चादर को फैलाता है, आँखों को ठंडक पहुंचाता है। यह सब इस बात का ऐलान है कि ईश्वर मानव से अभी निराश नहीं। लेकिन हमारा और आपका व्यवहार यह साबित करता है कि हम मनुष्य से निराश हैं। हम अपने आचार–व्यवहार से इस बात का प्रदर्शन कर रहे हैं कि हम इस मानव को, जो ईश्वर की रचना का सर्वोत्कृष्ट नमूना है, कोई महत्व नहीं देते।

ईश्वर की महिमा और प्रकृति का सौन्दर्य हर वस्तु में है। फल, कली, बूंद, घास का तिनका, मिट्टी का कण, पेड़ के पत्ते जिस चीज को देखिए तो मालूम होगा कि इस में एक दुनिया है। इन सब से बढ़कर आकर्षक और मनमोहक रचना मनुष्य की है। सारी चीजें, समस्त सृष्टि इसकी सेवा के लिए पैदा की गईं। यह सब इस बात का ऐलान करती हैं कि मनुष्य सर्वोत्कृष्ट प्राणी है। दुनिया की बारात का दूल्हा है। किन्तु हमारा और अपका व्यवहार यह साबित करता है कि मनुष्य में कोई गुण नहीं। हम अपने आचरण से खुदा की अदालत में अपने ख़िलाफ़ मुकदमा दायर करते हैं कि हमको दुनिया से उठा लिया जाए, मानो हम फरिश्तों की उस बात को साबित करना चाहते हैं जिसकी काट खुदा ने की थी। जब मानव–रचना के समय ईश्वर ने कहा था कि मैं इस धरती पर अपना खलीफा बनाना चाहता हूँ, तो फरिश्तों ने आशंका व्यक्त की थी, कि क्या आप ऐसे को ख़लीफ़ा बना रहे हैं जो ज़मीन पर बिगाड़ पैदा करेगा और खून बहायेगा। जब ख़ुदा ने चीजों के बारे में आदम से सवाल किया तो उसने ठीक जवाब दिया फरिश्ते जवाब नहीं दे सके। खुदा ने इन्सान को जिताया था हम उसको हरा रहे हैं।

ख़ुदा ने कहा था कि तुमको मालूम नहीं कि इन्सान में कैसे–कैसे गुण हैं। उस से ज्ञान

का सागर उबलता है, समुद्र में वह विशालता व गहराई न होगी जो उसमें है। उसकी आंखों में मुहब्बत की जो चमक है वह तुम नहीं पेश कर सकते। उसके दिल में नर्मी है, प्रेम है, ममता है, उस पर दर्द की चोट लगती है जिससे तुम वंचित हो। किसी पर तलवार चले, किसी के तलुओं में काँटा चुभे तो उसकी चुभन उसे अपने दिल में महसूस होती है। मनुष्य के पास जो सबसे बड़ी पूंजी है वह दया की पूंजी है, प्रेम की पूंजी है, वह एक आँसू है जो इन्सान की आँखों से किसी विधवा के सर को नंगा, किसी गरीब के चूल्हे को ठंडा देखकर किसी मरीज की कराह को सुनकर टपक पड़ता है। आँसू का वह बूंद जो समुद्र में डाला जाये तो उसे पवित्र कर देगा, गुनाहों के जंगल में डाल दिया जाये तो सब को जलाकर ज्योति से बदल दे। फरिश्ते सब कुछ पेश कर सकते हैं लेकिन आँसू का वह बून्द नहीं पेश कर सकते, जिसकी कीमत हम आप ने भी नहीं पहचानी, जो एक इन्सान दूसरे इन्सान के लिए बहाता है।

"हम रात को उठकर रोते हैं जब सारा आलम सोता है"।

फरिश्ते अपने मालिक को देख देखकर और उसके अस्तित्व व गुणों को पहचान कर नहीं सो सकते, लेकिन वह इन्सान जो किसी इन्सान की मुसीबत व दर्द के कारण नहीं सो सकता उसके जागने को फरिश्तों का जागरण नहीं पहुंच सकता। मनुष्य के पास सबसे अनमोल चीज यह है कि वह दूसरे के दुख दर्द से प्रभावित होता है। उसके अन्दर प्रेम का पदार्थ है उसको गतिशील करने वाली कोई चीज मिल जाये तो वह सक्रिय हो जाता है। फिर न मजहब को देखता है न जात–पात को। इन्सान इन्सान का दिल देखता है उसकी पीड़ा को महसूस करता है जिस प्रकार चुम्बक लोहे को खींचता है और वह खींचने पर मजबूर है उसी प्रकार इन्सान के दिल का चुम्बक इन्सान को खींचता है।

अगर इन्सान से यह दौलत छिन जाये तो यह दीवालिया हो जायेगा। यदि कोई देश इससे वंचित हो जाये, यदि अमेरिका की दौलत, रूस की शासन व्यवस्था, अरब देशों के पेट्रोल के स्रोत हों, हुनर बरसता हो, सोने और चांदी की गंगा–जमुना बहती हो, लेकिन उस देश में प्रेम स्रोत शुष्क हो जाये तो वह देश कंगाल है। उस देश पर ईश्वरीय वरदान अवतरित न होंगे। अभी इन्सान की आँख आँसू बहाने के काबिल है अभी इन्सान का दिल तड़पने और सुलगने और चोट खाने के काबिल है। जो दिल इस काबिल नहीं ऐसे दिल को दिल नहीं कहते। बल्कि पत्थर की सिल कहते हैं। जो ईश्वर के दरबार में कौड़ी के काबिल नहीं चाहे वह मुसलमान का दिल हो या हिन्दू, सिख, ईसाई का दिल हो। दिल तो इसलिए है कि तड़पे, लरजे, रोये। इसमें धरती से अधिक हरियाली, झरने से अधिक जलभराव, सृष्टि से अधिक विशालता और बादलों से अधिक बरसने की क्षमता है।

वह आँख इन्सान की आँख नहीं जिसमें नमी न हो। वह दिल इन्सान का दिल नहीं चीते का दिल है जिस पर कभी दर्द की चोट न लगे। जो कभी मानवता की पीड़ा में रोना तड़पना न जाने। वह माथा जिसपर कभी पश्चाताप का पसीना न आये वह माथा नहीं बल्कि कोई चट्टान है। जो हाथ मानवता की सेवा के लिए नहीं बढ़ता वह अपंग है। वह हाथ जो मनुष्य का गला काटने के लिए बढ़ता है उससे शेर का हाथ बेहतर था। अगर इन्सान का काम काटना था तो उसके सीने में धड़कते हुए दिल के बजाय एक तिजोरी रख दी जाती है। अगर इन्सान का काम मात्र तोड़–फोड़ की योजना बनाना

था तो उसके अन्दर इन्सान का दिमाग न रखा जाता बल्कि किसी राक्षस का दिमाग रख दिया गया होता।

पारिख साहब ने अपने भाषण में मानव शरीर की रचना के अजूबे बताये हैं, लेकिन आप मनुष्य के हृदय के अजायबात देखें तो शरीर के अन्दर के अजूबे मान्द पड़ जायेंगे। इसको ऐसा दिल दिया है कि पूरब में किसी को तक़लीफ़ हो तो वह पश्चिम में तड़प उठे। यह दिल की ज़िन्दगी थी कि बदर की लड़ाई में जो लोग क़ैदी बनाये गये और उन के हाथ बाँध दिये गये तो अल्लाह के रसूल (सल्ल0) इन बन्दियों की तकलीफ के एहसास से रात भर न सो सके। अगर कोई बच्चा रोता तो आप नमाज़ संक्षिप्त कर देते कि कहीं उसकी माँ बेचैन न हो। जो दिल किसी का दिल दुखाये, किसी को तकलीफ पहुंचाये तो वह दिल दिल नहीं है।

भाईयों! वह व्यवहार मानवता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। बाहर से कोई खतरा नहीं है। खतरा आन्तरिक है। वह है इन्सान दुश्मनी और मानवता को कुचलने का खतरा। इस खतरे से मुल्क को भी और कौम को भी बचाने की जरूरत है।

मुझे यहीं के एक सन्त की कही हुई कहानी याद आ गयी जिनका हाल ही में निधन हुआ है, वह कहते हैं, ''एक बारात बड़ी धूम धाम से जा रही थी'' बैन्ड बाजा भी था रौशनी और मशाल भी। बारात देखने वालों की भीड़ थी। एक व्यक्ति बड़े ध्यान से बारात देख रहा था, कुछ देर बाद उसने कहा, ''दूल्हा कहाँ है?'' लोगों ने कहा बेकार बकते हो, बारात नहीं देख रहे हो, तमाशा नहीं देखते हो आनन्द नहीं ले रहे हो? निरर्थक प्रश्न करते हो किन्तु वह व्यक्ति बड़ा यथार्थवादी था। उसने कहा बारात तो बहुत अच्छी है लेकिन दूल्हा नज़र नहीं आता! इसपर सबको ध्यान आया कि देखना चाहिए दूल्हा सचमुच नज़र नहीं आ रहा है। अब जो खोजबीन प्रारम्भ हुई तो मालूम हुआ कि दूल्हा घोड़े पर सवार था। घोड़े ने रास्ते के किसी गढ़े में उन्हें गिरा दिया है और बारात अपने शोर व हंगामा में आगे बढ़ती रही, बारात की धूम धाम और शोर व हंगामा में दूल्हा का किसी को होश ही नहीं रहा।

मुझे डर है कि पूरब से पश्चिम तक मानवता की जो बारात आधुनिक सभ्यता के साथ निकल रही है, जिसके दृश्य मैंने इस देश में भी देखे हैं, और यूरोप व अमेरिका में भी। कहीं यह बिन दूल्हा के बारात न हो। मानवता के इस बारात का दूल्हा मानव है। मानवता के इस दूल्हा की बारात पर आँसू बहाने वाला, इसकी चिन्ता करने वाला कोई नहीं। इस नगर में कितने आदमी हैं जो मानवता की बारात के दूल्हा कहलाने वाले सच्चे इन्सान हों? ऐसा मानव कहां है जिसकी दृष्टि शुद्ध मानवता पर हो जिसे खोकर पाने का मजा आये, जिसे हार कर जीतने का मजा आये।

सब अपनी जेब, अपना घर भरने की चिन्ता में हैं। और अपनी पार्टी को नफा पहुंचाने में प्रयत्नशील हैं। और बहुत उन्नति की तो नेशन को फायदा पहुंचाने की सोचने लगे। नेशन भी एक परिवार है। परिवार छोटा–बड़ा होता है। नेशनलिज्म भी एक किस्म की कुम्बा परवरी है। नेशनलिज़्म (क़ौमपरस्ती) को शायद मैं किसी समय ज़रूरी समझूँ।

मेरा सम्बन्ध उस वर्ग और उस गिरोह से है जिसने आजादी की लड़ाई में भरपूर हिस्सा लिया। और मुल्क व कौम की आजादी के लिए उस समय संघर्ष प्रारम्भ किया जब आजादी का नाम भी कोई नहीं जानता

था, लेकिन समझता हूं कि नेशनलिज्म भी एक नैरोमाइन्डेडनेस (संकुचित दृष्टिकोण) है। मानवता इससे भी अधिक विशाल है।

तमाम कौमें इन्सानियत की डालें (शाखे) हैं, असल चीज इन्सानियत है। इस मानवता को तबाही से बचाने के लिए आज कितने लोग और कितनी पार्टियां आदमियत के नाम से सक्रिय और इन्सानियत को बचाने के काम में लगी हैं। सभ्यता व संस्कृति, राजनीति व प्रशासन, साहित्य, दर्शन शास्त्र, ज्ञान और कला कौशल के आशियाने इन्सानियत की शाख पर कायम है। अगर इन्सानियत की शाख बाकी है तो आप जैसा चाहें वैसा नशेमन बना लें, लेकिन अगर शाख ही न रही तो नशेमन कैसे बाकी रहेगा। आज मानवता की डाल पर कितने प्रहार किये जा रहे हैं। आग लगाई जा रही है। हर व्यक्ति इस प्रयास में है कि आदमियत की शाख पर बड़े से बड़ा प्रहार करे।

आज हमारे देश में मनुष्य को मनुष्य से प्रेम और सहानुभूति नहीं रही। पहलू में दिल नहीं जो इन्सानियत का दर्द महसूस करते हों। हर एक को अपनी–अपनी पड़ी है। हमारे देश में जब रेल अथवा हवाई दुर्घटनाएं होती हैं तो हमारे समाज का नैतिक पतन खुलकर सामने आ जाता है। लोग दुर्घटना के शिकार होने वाले मुसीबतजदा लोगों की मदद के बजाय उनकी कलाई की घड़ियां और जेबों से पर्स निकालते हैं यह खतरा वह सिगनल है, वह एलारम है जिस पर पूरी सोसाइटी को चौकन्ना होना चाहिए।

❖❖❖

पृष्ठ.....11... का शेष

पानी पीना, सत्ताधारी और पूंजीपतियों की साँठगाँठ की वजह से आम जनता का शोषण हो रहा है, समाज में शराब का चलन बढ़ता जा रहा है, जिसकी वजह से अपराध और दुराचार की ज़्यादती है, हमारे नेताओं और शासकों को जनता की परेशानियों और समाज के बनाव बिगाड़ से कोई संबंध नहीं, क्योंकि इन समस्याओं के समाधान से एलेक्शन में हारने जीतने और वोटों के घटने बढ़ने का संबंध नहीं, यदि हम वास्तव में देश और देशवासियों के लिए सहानुभूति रखते हैं तो नीचे स्तर के लोगों की आर्थिक दुर्दशा पर विशेष ध्यान देना होगा, इसी प्रकार निचले वर्ग के बच्चे, शिक्षा में बिल्कुल शून्य हैं, मालदारों के बच्चे प्राइवेट स्कूलों में पढ़ कर ऊँचे स्थानों पर पहुँच जाते हैं, अब देश आज़ाद है, ग़रीबी की वजह से ग़रीब बच्चे ऊँची शिक्षा से वंचित न रहें, शासन की ओर से उन्हें पूरा सहयोग मिलना चाहिए इसमें धर्म जाति की बिना पर कोई भेद भाव न किया जाए, देश के अन्दर योग्य और ईमानदार लोगों का सम्मान किया जाए, रिश्वत और सिफ़ारिश का रास्ता बन्द किया जाए, भय और आतंक का माहौल बनाने के लिए निर्दोषों को न गिरफ़्तार किया जाए। वास्तविक अपराधियों को सामने लाया जाए और उनको अवश्य सज़ा दी जाए ताकि दूसरों को सबक़ मिले। हमारा देश भारत वर्ष एक विशाल देश है जहां नाना प्रकार के धर्म और रीति रिवाज हैं यही उसकी विशेषता है, इस भिन्नता में हमें एकता हर हाल में बाक़ी रखनी है तभी देश तरक़्क़ी करेगा, हमें उन सियासी नेताओं के बहकावे में नहीं आना है जो अपनी सियासी दुकान चमकाने के लिए ''लड़ाओ और हुकूमत करो'' की पालीसी अपनाते हैं।

हमारा पैग़ाम महब्बत है
जहाँ तक पहुँचे

❖❖❖

भारत का गणतंत्र

डॉ0 नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

भारत इस साल अपना 77 वां गणतंत्र दिवस 26 जनवरी 2026 को मनाएगा।यह वार्षिक आयोजन 26 जनवरी 1950 को भारतीय संविधान को अपनाने की याद में मनाया जाता है, जिसने भारत को एक संप्रभु गणराज्य बनाया।

वैसे तो भारत को 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता मिली लेकिन तब तक भारत के पास अपना कोई संविधान नहीं था बल्कि भारत सरकार के कानून मुख्य रूप से भारत सरकार अधिनियम 1935 पर आधारित थे जो अंग्रेजों के बनाए हुए थे, बाद में 29 अगस्त 1947 को हमारे देश का स्वतंत्र संविधान बनाने के लिए डॉ0 भीम राव अंबेडकर की अध्यक्षता में मसौदा समिति द्वारा संविधान लिखने की प्रकिया शुरू की गई।

भारतीय संविधान को तैयार होने में कुल 2 साल और 11 महीने का समय लगा और अंततः 26 जनवरी 1950 को देश में हमारा भारतीय संविधान लागू हुआ। ज्ञात हो कि 26 जनवरी की तारीख इसलिए चुनी गई क्योंकि 1930 में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के तहत पूर्ण स्वराज की घोषणा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा इसी तारीख को की गई थी।

26 जनवरी 1950 को देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने 21 तोपों की सलामी के साथ ध्वजारोहण कर भारत को पूर्ण गणतंत्र घोषित किया था, यह ऐतिहासिक क्षणों में गिना जाने वाला समय था। इसके बाद से हर वर्ष इस दिन को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है तथा इस दिन देशभर में राष्ट्रीय अवकाश रहता है।

हमारा संविधान देश के नागरिकों को लोकतांत्रिक तरीके से अपनी सरकार चुनने का अधिकार देता है। संविधान लागू होने के बाद डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने पुराने संसद भवन के दरबार हॉल में राष्ट्रपति की शपथ ली थी और इसके बाद पांच मील लंबे परेड समारोह के बाद इरविन स्टेडियम में उन्होंने राष्ट्रीय ध्वज फहराया था (अब इसे नेशनल स्टेडियम दिल्ली के नाम से जाना जाता है)।

भारत का गणतंत्र दिवस बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उस दिन को चिह्नित करता है जब भारत 1950 में एक गणतंत्र बना था। इस दिन, भारतीय संविधान लागू हुआ,जिसने देश को अपने स्वयं के कानून और अधिकार दिए। यह भारत के एक उपनिवेश से एक स्वतंत्र और स्वतंत्र राष्ट्र बनने की यात्रा को दर्शाता है। गणतंत्र दिवस हमें हमारे नेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा की गई कड़ी मेहनत और बलिदान की याद दिलाता है। यह लोकतंत्र, समानता और हमारे संविधान द्वारा निर्धारित मूल्यों का जश्न मनाने का दिन है, यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक नागरिक के पास अधिकार और स्वतंत्रता हो।

लोकतंत्र सरकार का एक ऐसा रूप है जिसमें जनता को अपने शासन संबंधी कानून चुनने का अधिकार होता है। गणतंत्र शब्द लैटिन शब्द रेस पब्लिका से लिया गया है,यह सरकार का एक ऐसा रूप है जिसमें देश को सार्वजनिक मामला माना जाता है।

आइए हम लोग लोकतंत्र और गणतंत्र के बीच के अंतर को समझते हैं। लोकतंत्र के 3 प्रमुख प्रकार हैंः— (1) प्रत्यक्ष लोकतंत्र (2) प्रतिनिधि लोकतंत्र (3) संवैधानिक लोकतंत्र। इसी प्रकार गणराज्यों के भी 5 प्रकार हैंः— (1) संवैधानिक गणराज्य (2)संसदीय गणराज्य (3) राष्ट्रपति गणराज्य (4) संघीय गणराज्य (5) ईश्वरीय गणराज्य।

लोकतंत्र में सत्ता जनता

के हाथ में होती है जबकि गणतंत्र में सत्ता व्यक्तिगत नागरिकों के हाथों में होती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में कानून बहुमत द्वारा बनाए जाते हैं तो दूसरी ओर गणतंत्र प्रणाली में कानून जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा बनाए जाते हैं।

लोकतंत्र में बहुमत की इच्छा को मौजूदा अधिकारों पर हावी होने का अधिकार है जबकि गणतंत्र प्रणाली में बहुमत की इच्छा को दरकिनार नहीं किया जा सकता क्योंकि संविधान उन अधिकारों की रक्षा करेगा।

जैसा कि ऊपर वर्णन हुआ कि एक देश में एक से अधिक प्रकार के लोकतंत्र हो सकते हैं इसी तरह एक देश में एक से अधिक प्रकार के गणराज्य हो सकते हैं। लोकतंत्र में सरकार पर कोई प्रतिबंध नहीं होता जबकि गणतंत्र में सरकार पर प्रतिबंध होते हैं। लोकतंत्र में मुख्य ध्यान जनता की सामान्य इच्छा पर होता है तो दूसरी ओर गणतंत्र में मुख्य ध्यान संविधान पर होता है।

संविधान बनने के बाद से ही विपक्ष की ओर से सदैव ये आरोप लगाया जाता रहा है कि सत्ता पक्ष लोकतंत्र को कमज़ोर कर रही है, इसी तरह वर्तमान में भी विपक्ष निरन्तर आरोप लगा रहा है कि वर्तमान सरकार लोकतंत्र को खत्म कर रही है,विपक्ष की ओर से वोट चोरी का मुद्दा तूल पकड़ रहा है और जगह जगह इसको लेकर चर्चा गर्म है,। इसी बीच एसआईआर को लेकर भी विपक्ष सरकार को और चुनाव आयोग को घेर रही है, ये मामला कहां जाकर खत्म होगा नहीं मालूम।

दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला भारत, दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था (जापान के साथ संयुक्त) होने का दावा करता है,लेकिन अपनी इतनी विशाल और अत्यधिक विविध अर्थव्यवस्था के बावजूद आज भी देश के अनेक हिस्से में गरीबी व्याप्त है जबकि भारत अब भी आधुनिक भारत एक विविध आबादी का घर माना गया है, जिसमें कई धार्मिक समुदाय और अलग अलग भाषा और बोली बोलने वाले समूह सदियों से साथ रहते आये हैं। मगर इधर भारत की धर्मनिरपेक्ष पहचान और बहुलवाद तथा बहु संस्कृतिवाद की प्रतिष्ठा खतरे में दिखाई पड़ रही है और सामाजिक समूह समानता के मामले में निम्न–श्रेणी का प्रदर्शन करते दिखाई दे रहे है,जिसका एक कारण उन कानूनों और नीतियों की श्रृंखला है जो विशेष समुदाय को लक्षित कर रहे हैं तो दूसरी ओर कई राज्य सरकारों पर आरोप है कि उसकी बुलडोजर नीति ने भेदभाव के दायरे को और बढ़ा दिया है।

इसी प्रकार देश में कई चुनावों को लेकर चुनाव आयोग विपक्ष के निशाने पर है और उसके भरोसे पर भारी कमी पाई जा रही है जो लोकतन्त्र के लिए अच्छा संकेत नहीं है। इसी तरह अनेक जगहों पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता संकट में दिखाई दे रही है तो वहीं मीडिया स्वामित्व के बढ़ते प्रभाव और नियंत्रण, इंटरनेट शटडाउन और पत्रकारों के खिलाफ एक्शन लेने के कारण सरकार को विपक्ष की आलोचना का सामना करना पड़ रहा है।

माना जाता है कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र हैं मगर आश्चर्य है कि एक महिला प्रधानमंत्री और दो महिला राष्ट्रपति द्वारा देश का नेतृत्व करने के बावजूद, देश को लैंगिक असमानता, विशेष रूप से महिलाओं के खिलाफ हिंसा और भेदभाव से संबंधित समस्याओं को दूर करने में अब भी संघर्ष करना पड़ रहा है। हालाँकि हाल के वर्षों में एक सकारात्मक बदलाव आया कि महिलाओं का मतदान प्रतिशत अक्सर पुरुषों के मतदान प्रतिशत से अधिक होने लगा है और स्थानीय लैंगिक कोटा महिलाओं को सशक्त बनाने में सफल हो रहा है जो लोकतन्त्र को मज़बूती दे रहा है।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

अबुल फजल और दीन–ए इलाहीः–

अबुल फ़ज़ल पर यह आरोप लगाया जाता है कि अकबर के लिए वह अकबर से अधिक दीन–ए इलाही का ध्वजावाहक बन गया था, उसको अकबर की प्रवृत्ति में बड़ा दखल हो गया था। वह उसको धार्मिक प्रयोगों से रोक सकता था लेकिन अपनी पद प्रतिष्ठा के मोह के लिए ऐसा नहीं कर सका। उससे पूछा गया कि प्रसिद्ध धर्मों में उसका झुकाव किस धर्म की ओर है, तो उसने उत्तर दिया कि अभी तो कुछ दिन अनिश्वरवाद की घाटी में सैर करने का इरादा है, एक बार उलमा ने गुप्त रूप से यह सन्देश भिजवाया कि वह उन लोगो के पीछे क्यों पड़ा रहता है, तो उसने उत्तर कहला भेजा कि मुझको इस कहानी के अनुसार समझो कि मैं एक आदमी का नौकर हूँ। बैगन का तो नौकर नहीं। राजकुमार सलीम ने तो उस पर यह आरोप लगा रखा था कि वह सार्वजनिक रूप से लोगों को कुछ और बातों की प्रेरणा देता, लेकिन जब तन्हाई में होता तो और ही काम करता। यह आरोप उसने इसलिए लगाया कि एक दिन उसने अबुल फ़ज़ल के घर में चालीस कातिबों (लिखने वालों) को कुरआन और कुरआन की व्याख्या लिखते हुए देखा। मासरुल उमरा में यह भी है कि वह रातों को दरवेशों के घरों में जाता और अपने ईमान की रक्षा के लिए दुआएँ कराता। इसी अबुल फ़ज़ल ने अपने बादशाह स्वामी के धर्म का जो चित्र अकबर नामा और आईन–ए अकबरी में खींचा है उसका भी अध्ययन करना आवश्यक है। उसके चमत्कार भरे कलम की प्रमुख विशेषता यह है कि वह जैसी रचना चाहता शब्दों के साँचे में ढाल देता। यदि वह अकबर नामा न लिखता तो अकबर ‘‘अकबर महान’’ न कहलाता। लेकिन अपने महान स्वामी के धर्म से सम्बन्धित उसके जादुई कलम में बहुत अधिक तेज़ी और गर्मी पैदा नहीं हो सकी है। फिर भी देखना यह है कि वह इस सम्बन्ध में क्या लिखता हैः

वह इबादत घर की बहसों का विवरण बहुत अधिक नहीं लिखता, जैसा कि मुल्ला अब्दुल कादिर ने लिखा है। वह सामान्य बात लिखता है। उसका शाब्दिक अनुवाद तो कठिन है लेकिन उसका निचोड़ निम्न में प्रस्तुत किया जाता है। अकबर के 23 वर्ष जलूस में लिखता हैः

पवित्र व्यक्तित्व को खुदा की दी हुई बुद्धि, कलाओं की पहचान, पवित्र हस्ती की दशा और लाल और प्रकाशमय चेहरा प्राप्त है लेकिन अपनी प्रकृत्ति की रंगारंगी के कमाल की वजह से वह अधिकतर अपने चेहरे से विशेष पर्दा उठाकर शासन करते हैं और समय की आवश्यकता के अनुसार अपने चरित्र का प्रदर्शन और बातचीत करते हैं। अब जबकि बोध की सुबह प्रकट हो चुकी है और बुद्धिमानी का सितारा प्रकाश फैला रहा है तो उनकी सूरत की पहचान पर जो भावों का नकाब पड़ा हुआ था उसका मनोविज्ञान और दर्शन के विशेषज्ञ अनुमान लगाते हैं। इसीलिए उन्होंने सच्चाई की तलाश और न्यायप्रियता के लिए एक मंच की बुनियाद डाली ताकि विभिन्न धर्मों और विभिन्न कौमों की पहचान की जाए और

उनकी वास्तविकता जानी जाए। दलीलों और तर्कों की जाँच हो, और शुद्ध और अशुद्ध चीजों में भेद हो। एक संक्षिप्त अवधि में एक सुन्दर भवन का निर्माण किया गया जिसके बाद धोखेबाज़ी करने वाले अपने घरों में जा कर सो रहे और भावों की दुनिया की एक यादगार बन गए और रुतबे की पहचान को ऊँचाई प्रदान हो गयी। अब जबकि ख़िलाफ़त के केन्द्र अर्थात फतेहपुर सीकरी में बादशाह के मुखिया का उदय हुआ तो जुमे की रातों (वृहस्पतिवार) को आन्तरिक पवित्रता का प्रकाश स्थान आबाद किया जाता। यहाँ मदरसा और खानकाह के बुद्धिमानों की परीक्षा होती। सूफी, हकीम, तर्कशास्त्री, फकीह, सुन्नी, शीया, ब्राह्मण, जैनी, शैव, चार्वाक, ईसाई, यहूदी, साबी, जरदुश्ती आदि हुमायूँ की सभा में निम्बर पर बादशाह को निःस्वार्थ और सम्पन्न देखकर खुशी प्राप्त करते और किसी भय के बिना रहस्यों का भण्डार खोलते। हर गिरोह के न्यायप्रिय और सच्चाई देखने वाले अपने गर्व और स्वाभिमान को छोड़कर उदारता से काम लेते। अपने आप को संवारने वाले और लड़ाई झगड़ा की आदत रखने वाले लोग अपने नीचपन, अल्पदृष्टि और घमण्ड के कारण घाटे में रहे और वह अपमानित हुए। दुनिया के बादशाह की दूरदृष्टि और सच्चाई के कारण मंचों की व्यवस्था विनम्र रहती दिल और आँखो को ताजगी प्राप्त हुई, बहुत जागने की रात के लिए चिराग में रोशनी पैदा हुई। अन्धानुकरण के अंधेरों में शोध के दीप प्रज्वल्लित हुए। मदरसा और खानकाह के लोगों को कसौटी पर कसा गया। इस धर्म के दिखावे की शैली से दुनिया के चाहने वालों के लिए अपना देश भी कड़वा हो गया। और वह अपने अजनबीपन ही के दोस्त हो गए। सम्राट के सातों दीपों के दरबार का वतन अन्य देशों और राष्ट्रों के विद्वानों का केन्द्र बन गया। बहाना करने वालों का सोना बिखेरने का रहस्य खुल गया। कुछ नासमझ और बेहूदा बातें करने वालों ने बेहूदा बातें शुरु कीं लेकिन उनकी बेकार की बातें कोई काम न आयीं। प्रेम की शरण की रोशनी धीमी पड़ गयी। और सम्राट ने अपनी भौतिक और भावनात्मक कीर्ति दिखायी, प्रत्यक्ष और परोक्ष के कारण ऐसे समूहों की ओर ध्यान नहीं दिया, अपने दिल और जुबान को नफ़रत से बचाए रखा और अपने पवित्र दिल पर निराशा की गर्द जमने न दी और ऐसे लोग थोड़े ही समय में अपनी हस्ती से वंचित हो गए और इस समय बादशाह सलामत खुदा के दिए हुए ज्ञान के केन्द्र में हैं और समूह के समूह लोगों की कठिनाइयों को अपनी अन्तरात्मा की रोशनी से दूर करते हैं। इस इबादतगाह की यह सामान्य शैली वर्तमान युग के पाठकों को सन्तुष्ट नहीं कर सकती। यह तो, एक दरबारी इतिहासकार जैसा कथन होना चाहिए, वैसा ही है। इबादतखाने की सारी बहसों का उल्लेख आवश्यक था। केवल एक बहस का उल्लेख आया है। जिसका निचोड़ यह है कि एक दिन एक ईसाई पादरी ने यह चुनौती दी कि वह इंजील हाथ में लेकर आग में कूद सकता है। इस तरह कोई कुरआन लेकर आग में कूदे जो जिन्दा रहे, वही सच्चाई पर समझा जाए। पादरी की इस शर्त को मानने के बजाए लोग पक्षपात और बेहूदा बातों का प्रदर्शन करने लगे, जो सम्राट को पसन्द नहीं आयी। और उन्होंने कहा कि कुछ प्रत्यक्ष बातों के अपनाने को लोग मूल समझते हैं, अन्तरात्मा के सुधार की चिन्ता नहीं करते। इसलिए ब्राह्मणों को अपने बुजुर्गों के धर्म को स्वीकार करने के लिए डराते और धमकाते हैं लेकिन स्थायी तर्क से जब मन प्रकाशित न हो तो किसी बात को स्वीकार करना लाभदायक नहीं।

❖❖❖

राष्ट्रीय गीत-वन्दे मातरम के 150 वर्ष

इं0 जावेद इक़बाल

भारत एक सेक्युलर देश है जिसका अर्थ है कि यहां संविधान के दायरे में रहते हुए कानून बनेंगे, धर्म के आधार पर नहीं। शासन धर्म के आधार पर नहीं बल्कि धर्म निरपेक्षता के आधार पर चलेगा। धर्म के आधार पर न कोर्ट के फैसले होंगे और न ही कोई भेद भाव होगा। बाबा साहेब डॉ0 अम्बेडकर की अध्यक्षता में बनी संविधान कमेटी ने दलितों, पिछड़ों, अल्पसंख्यकों इत्यादि के हितों की रक्षा के लिए संविधान में सभी संभव प्रयास किए थे। इसीलिए भारत का संविधान दुनिया के अन्य देशों की तुलना में विशेष महत्व रखता है।

वर्तमान में भारत की आबादी 140 करोड़ के लगभग है जिसमें हिन्दूओं की संख्या लगभग 70 प्रतिशत यानी सौ करोड़ के क़रीब और मुसलमान 20 प्रतिशत क़रीब 28 करोड़ है, बाक़ी में अन्य धर्म के लोग आते हैं। अठाईस करोड़ की संख्या कम नहीं होती, यह दुनिया भर के मुस्लिम देशों में दूसरे तीसरे नम्बर की आबादी है, मगर दूसरी ओर सौ करोड़ हिन्दुओं की तुलना में मुसलमान अल्पसंख्यक बन जाते हैं। अक्सर हमारे बिरादराने वतन के मन में यह हक़ीक़त पीड़ा बन कर खटकती है कि 100 करोड़ होने के बावजूद दुनिया में धर्म के आधार पर उनका कोई देश नहीं है। आजादी के बाद उस समय के अधिकतर लीडर भारत को एक सेक्युलर रूप देने पर इसलिए विवश हुए कि आजादी की जंग में मुसलमानों का हिस्सा उनसे कम नहीं बल्कि कुछ ज़्यादा ही था। चमकते दमकते सूरज की तरह यह भी एक हक़ीक़त है कि सन् 1857 में आजादी की चिंगारी मुसलमानों ने ही लगाई थी जिसके नतीजे में हजारों मुसलमानों और मुस्लिम उलेमा को पेड़ों पर लटका कर फांसी दी गई थी। क्योंकि अंग्रेजों ने सत्ता मुसलमानों से छीनी थी इसलिए पूरे देश में अंग्रेजी शासन का विरोध भी मुख्य रूप से मुसलमानों के द्वारा ही किया जा रहा था। इस हक़ीक़त को जानने पहचानने के कारण ही उस समय के लीडरान ने सभी देशवासियों को समान अधिकार देने के मक़सद से धर्म निरपेक्ष राष्ट्र की मजबूत बुनियाद रख दी।

प्रत्येक देश का एक राष्ट्रगान होता है मगर हमारे देश में कुछ विवादों के चलते दो गीत हैं, एक राष्ट्रगान कहा जाता है जो बहुत लोकप्रिय है।

स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस तथा अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर इसे गाया जाता है। दूसरे को राष्ट्रगीत कहते हैं। भारत को हिन्दू राष्ट्र बनाने का सपना देखने वालों की हमेशा से इच्छा रही है कि इसे ही राष्ट्रगान होना चाहिए, मगर उस समय के लीडरान ने रवीन्द्र नाथ टैगोर के लिखे हुए "जन गण मन अधिनायक" को राष्ट्रगान का दर्जा दिया और "वन्दे मातरम्" के बारे में जवाहर लाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, रवीन्द्र नाथ टैगोर आदि के मशविरे से वन्दे मातरम् के पहले दो बंदों को ही राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकार किया।

"वन्दे मातरम्" वाला गीत बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय के नाविल "आनन्द मठ" में एक कविता के रूप में लिखा गया है जो कि सन् 1882 में प्रकाशित हुआ था, हालांकि इस गीत के पहले दो बंद सन् 1875 में लिखे जा चुके थे। कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन 1896 में रविन्द्र नाथ टैगोर ने इस गीत को पहली बार गाया था। इन दो बंदों में भारत भूमि की प्रशंसा की गयी है और उसे माँ का दर्जा दिया गया है, यूं तो उर्दू में भी "मादरे वतन" में भी वतन की मट्टी को मां का दर्जा हासिल है मगर मुशरिक और बुत परस्त क़ौम जिस तरह हर चीज के सामने अक़ीदत से सर झुका देती है और उसकी पूजा करने लगती है इसी तरह इस गीत में भी माँ समान देश की धरती की पूजा का तसव्वुर शामिल हो गया है, वरना "वन्दे" का शाब्दिक अर्थ "प्रणाम" यानी "सलाम" है।

बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने इस गीत के पहले दो बंद सन् 1875 में लिखे थे, गीत के शब्द और उनके अर्थ इस तरह हैंः—

वन्दे मातर, वंदे मातरम् (मेरा सलाम ऐ माँ मेरा सलाम) सुजलाम सुफलाम मलयज शीतलाम (मीठे पानियों और मीठे फलों वाली, ठंडी जुनूबी हवाओं वाली) शस्य शामलाम मातरम् (हरी भरी फैसलों से भरी मेरी माँ) वन्दे मातरम् वंदे मातरम शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकित यामिनी (उसकी रातें चांदनी में दमकती हैं) फुल्ल कुसुमित द्रुमदल शोभिनाम् (ज़मीन उसकी बड़ी खूबसूरत, दरख़्तों से ढकी हुई) सुहासिनी सुमधुर भाषिणी (क़हक़हों वाली मीठी बोली वाली) सुखदाम् वरदां मातरम् (खुशहाली देने वाली नेमतें देने वाली मेरी माँ)

यह गीत संस्कृत और बंगाली के मिले जुले अंदाज में लिखा गया है। हर जबान में एक एक शब्द के कई कई मानी होते हैं और इंसान अपने ज़ौक़ अपनी श्रद्धा अपने अक़ीदे अपनी आस्था के अनुसार किसी एक माने को चुनकर इबारत का मफहूम तय करता है। गीत का सब से पहला शब्द "वन्दे" का शाब्दिक अर्थ तो वास्तव में वन्दना करना, हम्द करना, तारीफ बयान करना ही है मगर गीत के अंतिम भाग में जो कि बाद में लिखा गया था और जिसे उस समय की सरकार ने स्वीकार नहीं किया था (हम ने भी उस भाग को इस लेख में नहीं लिखा है) मात्र भूमि को देवी दुर्गा के रूप में प्रस्तुत करके उसके सामने झुकने का तसव्वुर पेश किया गया है, जिसके कारण मुसलमानों की तरफ से हमेशा ही इसका विरोध किया गया।

इसीलिए जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाषचंद्र बोस, राबिंदर नाथ टैगोर, मौलाना आजाद वगैरह की कमेटी ने गीत के पहले दो बंदों की ही स्विकृति दी थी।

मशहूर हदीस है कि आमाल का दारोमदार नियत पर है, लिहाजा यह पढ़ने वाले पर मुनहसिर करता है कि वह वन्दे शब्द का अर्थ सलाम और तारीफ समझता है या देशरूपी देवी के सामने झुकना समझता है। मुसलमानों के विरोध की दूसरी वजह नाविल के अन्दर मुसलमानों के विरुद्ध विचारों का बयान करना है, और यह गीत उस नाविल का हिस्सा है।

आजादी की जंग में हिस्सा लेने वाले मतवालों में जिस तरह "इंकलाब ज़िन्दाबाद" का नारा बहुत मक़बूल था उसी तरह "वन्दे मातरम्" का नारा भी दिलों में जोश भर देने वाला था। उस ज़माने में डाक्टर इक़बाल का लिखा हुआ तराना" सारे जहां से अच्छा हिंदोसतां हमारा" भी

बहुत मक़बूल था।

आजादी के बाद राष्ट्रगान के रूप में रवीन्द्र नाथ टैगोर के गीत "जन गण मन अधिनायक" को चुना गया यह गीत सन् 1905 में लिखा गया था और पहली बार 27 जनवरी 1911 को भारतीय कांग्रेस के अधिवेशन में सरला देवी ने गाया था। इसे संविधान सभा ने सन् 1950 में राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार किया था। इस गीत के बोल यह हैंः—

जन गण मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता पंजाब सिंधु गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग विंध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधि तरंग तव शुभ नामे जागे तव शुभ आशीष मांगे गाहे तव जय गाथा जन गण मंगल दायक, जय हे भारत भाग्य विधाता जय हे जय हे जय हे जय जय जय जय हे।

इस गीत के बारे में एक महत्वपूर्ण विवाद सामने आया है। कुछ विशेषज्ञों के अनुसार वर्ष 1911 में अंग्रेजों के शासन काल में ब्रिटेन के शासक जार्ज पंजुम भारत आए थे। तब उनके अभिनन्दन में रवीन्द्र नाथ टैगोर ने बंगाली भाषा में इस गीत की रचना की थी। इसकी प्रत्येक पंक्ति में ब्रिटेन के बादशाह जार्ज पंजुम की तारीफ बयान की गई है। इसका अनुवाद कुछ इस तरह हैः— भारत की सारी जनता की ओर से उसके राजा का जयकार है। वह भारत की क़िस्मत के रखवाले हैं। भारत के सभी राज्यों, सभी नदियों और पहाड़ों की यही कामना है कि तेरे मुबारक नाम को बुलन्दी हासिल हो। तुझी से हम आशीर्वाद मांगते हैं और तेरी ही जय जयकार करते हैं। जन जन को खुशहालियां देने वाले तेरी जय हो। तू भारत की क़िस्मत को संवारने वाला है, तेरी जय हो बारम्बार जय हो।

अनुचित न होगा कि इस हक़ीक़त से भी आगाह कर दिया जाए कि वर्ष 1913 में इस गीत के रचनाकार को साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला था।

यह दोनों ही गीत बंगाली भाषा में बंगाली कवियों द्वारा लिखे गए हैं, दोनों ही विवादों के घेरे में हैं वन्दे मातरम् में भारत भूमि की प्रशंसा करते करते उसे देवी दुर्गा का रूप देकर उसकी पूजा का दृष्टिकोण (नजरिया) शामिल कर दिया गया है और जन अधिनायक में पराधीन भारत के शासक की प्रशंसा की संभावना जताई जा रही है।

अलबत्ता अल्लामा इक़बाल का तराना "सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा" दिलों को गरमा देने वाला, देश प्रेम से ओतप्रोत उर्दू का बेहतरीन गीत है।

वर्तमान में लोकसभा में सरकार की ओर से वन्दे मातरम् के 150 वर्ष पूरे होने पर एक लम्बी 10 घंटे की चर्चा का आयोजन किया गया जिसे प्रियंका गांधी ने फिजूल की बहस क़रार देते हुए सत्ता पक्ष के दुष्प्रचार का जवाब दिया और सदन को हक़ीक़त से आगाह किया। दूसरी ओर मुस्लिम सांसदों के द्वारा लोकसभा में बोलते हुए तौहीद के पैगाम को स्पष्ट शब्दों में बयान किया गया। मुसलमान मुल्क़ से मुहब्बत करते हैं, मुल्क़ से मुहब्बत उनके मज़हब का एक हिस्सा है, मुल्क़ की सरहदों की हिफ़ाज़त भी उनके ऊपर वाजिब है मगर कोई भी मुसलमान मुल्क़ की इबादत नहीं करता क्योंकि एक अल्लाह (ईश्वर) के सिवा किसी भी दूसरी चीज़ की इबादत शिर्क है।

इस तरह अल्लाह तआला ने इस अधिवेशन को मुल्क में तौहीद और रिसालत के पैगाम को जन जन तक पहुंचाने का ज़रिया बना दिया।

❖❖❖

साम्प्रदायिक हिंसा से देश व समाज को कैसे बचाएं?

मुहम्मद सलीम इंजीनियर

साम्प्रदायिक हिंसा हमारे देश के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती आजादी के बाद ही से बनी हुई है। देश में आजादी के बाद करीब 30 हज़ार साम्प्रदायिक दंगे या हिंसा की घटनाएं हुई है, जिनमें हजारों की संख्या में मासूम और बेगुनाह लोग मारे गये हैं। घर और व्यापार तबाह हुए हैं, इससे हुए आर्थिक नुकसान का अंदाजा लगाना मुश्किल है।

यह स्पष्ट सच है कि इन घटनाओं में लगभग सारा नुक्सान मुस्लिम समुदाय का ही हुआ है, जो यह साबित करता है कि यह घटनाएं पूर्व नियोजित एवं मुस्लिम समुदाय को नुकसान पहुंचाने के उद्देश्य से ही की जाती हैं।

आज़ादी के बाद से अब तक जारी इन हिंसा की घटनाओं को बहुत चालाकी से साम्प्रदायिक दंगों के रूप में प्रचारित करके यह आभास कराने की कोशिश की गयी है कि यह सम्प्रदायों के बीच आपसी टकराव है, इसकी वजह दोनों पक्ष हैं और नुकसान भी दोनों ही पक्षों का होता है। लिहाजा दोषी दोनों ही पक्ष हैं और सजा भी दोनों ही पक्षों को मिलनी चाहिए। इस सुनियोजित, भ्रमित प्रचार ने पीड़ितों को न्याय दिलाने में बड़ी रुकावट का काम किया और पीड़ितों से सहानुभूति के बजाय उन्हें भी शक के दायरे में खड़ा कर दिया। यह साम्प्रदायिक एवं फासिस्ट शक्तियों के षड्यंत्र का हिस्सा हैं। यह बात अब दिन की रोशनी की तरह स्पष्ट हो चुकी है कि यह घटनाएं साम्प्रदायिक दंगे नहीं, बल्कि अल्पसंख्यकों विशेष रूप से मुसलमानों पर योजनाबद्ध हमले हैं।

यह बात स्पष्ट है कि कोई हिंसा की घटना अगर किसी उत्तेजना का परिणाम हो या दो व्यक्तियों या समूहों के बीच टकराव हो तो वह घंटे आधे घंटे के लिए हो सकती हैं। अगर हिंसा घंटों और दिनों तक जारी रहती है तो यह उसी वक्त संभव है जब यह पूर्व नियोजित हो तथा दंगाइयों के साथ पुलिस, प्रशासन या सरकार के कुछ हिस्से की इसमें मिलीभगत अथवा मौन स्वीकृति हो। हाल की घटनाओं और गुजरात के नरसंहार, 1984 में सिख समुदाय पर हुए हमले, 1992 में बाबरी मस्जिद का विध्वंस और उसके बाद मुसलमानों पर हमले, उड़ीसा में इसाईयों पर हुए हमले इसके कुछ दर्दनाक उदाहरण हैं।

मुसलमानों के प्रति घृणा को वैचारिक रूप से आधार बनाकर भारत की आम जनता में मुसलमानों के प्रति नफरत फैलाने का सुनियोजित प्रयास करने वाला साम्प्रदायिक एवं फॉसिस्ट तबका भारत में बहुत बड़ी संख्या में नहीं है। वह बहुत ही अल्पसंख्या में है, मगर उसके दुष्प्रचार का प्रभाव काफी दूर तक फैला है। यह फासिस्ट वर्ग अपने आपको सबसे ज़्यादा देशभक्त समझता है और अपनी इस मुस्लिम विरोधी नीति को मजबूत भारत के निर्माण के लिए जरूरी समझता है, इसीलिए मुस्लिम समुदाय का आर्थिक या शैक्षिक रूप से तरक्की करना उसे बिल्कुल गवारा नहीं है।

सुनियोजित हिंसा के माध्यम से मुस्लिम समुदाय को आर्थिक रूप से तबाह करना और इतना भयभीत कर देना कि वे अपने अधिकारों के बारे में अपनी और देश की तरक्की के बारे में सोचने के लायक न रहें।

फासिस्ट ताक़तें यही चाहती हैं। वे चाहती हैं कि अपने अस्तित्व और सुरक्षा का खतरा उन्हें हर वक़्त सताता रहे।

पिछले कुछ सालों से इस फासिस्ट एजेंडे ने नयी दिशा में काम किया है। देश में जगह–जगह बम धमाकों के माध्यम से मासूम और बेगुनाह लोगों की जान लेकर, झूठे प्रचार के माध्यम से उसका इल्जाम मुसलमानों पर रखकर, अच्छे पढ़े–लिखे, मुस्लिम युवाओं को सताने और भयभीत करने की योजना पर अमल किया गया। इस खतरनाक षड्यंत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर काम कर रही इस्लाम व मुस्लिम विरोधी ताक़तें, अमेरिका और इसराईल आदि को साथ लिया जा रहा है।

हमारे देश की अमेरिका और इसराईल से बढ़ती नज़दीकियों ने अपने ही देश की एक बड़ी मुस्लिम आबादी को शक के दायरे में खड़ा कर, भारत को कमजोर करने के इन साम्राज्यवादी ताकतों के मंसूबों की परोक्ष रूप से मदद ही की है।

इन हालात में हम सब देशवासियों का यह दायित्व है कि हम देश को गलत राहों पर जाने से रोकें। साम्प्रदायिक व फॉसिस्ट तरीके से देश को कमजोर करने वाले, नफरत फैलाने वालों के दुष्प्रचार से भारत की जनता को बचाएं, सरकार एवं प्रशासन को इस दुष्प्रचार की बरसों पुरानी गुलामी से आजाद कराने के सुनियोजित व संगठित प्रयास करें।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि भारत की जनता, प्रेम व भाईचारे ही में विश्वास रखती है, मगर इस दुष्प्रचार के जहर ने काफी असर किया है। इस जहर को और फैलने से रोकने के लिए जरूरी है कि कई स्तरों पर आपसी संवाद और मेल–जोल को बढ़ाने तथा एक–दूसरे के बारे में गलतफहमियां दूर करने की संगठित कोशिशें की जाएं।

सामाजिक स्तर पर विभिन्न धर्म व सम्प्रदायों के मानने वालों और धर्माचार्यों के बीच निरंतर संवाद कायम किये जाएं ताकि हम एक–दूसरे के धर्म और आस्थाओं से ठीक तरह से सीधे तौर पर परिचित हों तथा एक–दूसरे के बारे में संवादहीनता और दुष्प्रचार की वजह से फैली हुई गलतफहमियों का निवारण हो सके। इससे न सिर्फ आपसी प्रेम, भाईचारा और विश्वास बढ़ेगा बल्कि पूरा देश मिलकर तरक्की और समृद्धि की राह पर आगे बढ़ेगा।

इस संवाद को मुस्लिम समुदाय और पुलिस व प्रशासन के बीच भी कायम करना साम्प्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए ज़रूरी है। पुलिस व प्रशासन में भी एक लंबी अवधि के दुष्प्रचार से मुस्लिम समुदाय के प्रति ग़लत धारणा पैदा हुई है। उसके नतीजे में ऐसी घटनाओं के समय पुलिस व प्रशासन के अधिकारियों की साम्प्रदायिक मानसिकता बहुत खतरनाक साबित होती है। यह बात सही है, साम्प्रदायिक व मुस्लिम विरोधी मानसिकता वाले अधिकारियों का प्रतिशत बहुत ज़्यादा नहीं है। ऐसे संवाद को बढ़ाना बहुत ज़रूरी है। जिसमें पुलिस व प्रशासन व मुस्लिम समुदाय एक–दूसरे से ठीक से परिचित हों तथा इस्लाम व मुसलमानों के बारे में पायी जाने वाली गलत धारणाएं दूर हो सकें। पुलिस के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इन ग़लत धारणाओं को दूर करने संबंधी विषय भी शामिल किये जाएं।

हम ज़िम्मेदार नागरिकों को यह दायित्व निभाना पड़ेगा कि इस सुनियोजित हिंसा को रोकने में सरकार अपना दायित्व निभाए, कानून हाथ में लेने वाले, नफरत फैलाने वाले राष्ट्र व समाज विरोधी तत्वों और उनकी प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मदद करने वाले गैरजिम्मेदार अधिकारियों पर जल्द और कानूनसम्मत कार्यवाहियां हों ताकि यह स्पष्ट

शेष पृष्ठ ....30....पर

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी

इस्लामी अक़ीदे और ईमानियात से संबंधित प्रश्नों के उत्तर

क़यामत और आखिरत

प्रश्नः आखिरत किसे कहते हैं?

उत्तरः एक दिन ऐसा आएगा, जब सारी दुनिया फना कर दी जाएगी। उसके बाद अल्लाह तआला तमाम इन्सानों को उनके आमाल के हिसाब—किताब के लिए दोबारा जिन्दा करेंगे। उस दिन को आखिरत कहते हैं।

प्रश्नः क़यामत के दिन क्या होगा?

उत्तरः उस दिन तमाम मुर्दों को जिन्दा करके एक जगह इकट्ठा किया जाएगा। इसलिए उसे यौमे—हश्र भी कहते हैं यानी इकट्ठा करने का दिन।

प्रश्नः तमाम इन्सानों को एक जगह पर क्यों इकट्ठा किया जाएगा?

उत्तरः उस दिन अल्लाह तआला दुनिया में किए गए लोगों के आमाल के बारे में फैसला फरमाएँगे। जिन लोगों ने इस दुनिया में बुरे काम किए होंगे उन्हें सज़ा मिलेगी और जिन लोगों ने अच्छे काम किए होंगे उन्हें इनाम दिया जाएगा।

प्रश्नः कुरआन मजीद में क़यामत के दिन की कैफियत किस तरह बयान की गई है?

उत्तरः कुरआन मजीद में क़यामत के बारे में जो तफ़्सीलात बयान की गई हैं, उनसे मालूम होता है कि यह बहुत ही हौलनाक दिन होगा। हर आदमी अपने बारे में परेशान होगा और उसे सिर्फ अपनी फिक्र होगी, कोई किसी का मददगार नहीं होगा।

प्रश्नः अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने क़यामत के करीब होने की क्या निशानियाँ बयान फरमाई थीं?

उत्तरः अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने फरमाया था कि लोग नमाज पढ़ना छोड़ देंगे। अमानत में खियानत करेंगे। सूद खाएँगे। झूठ बोलेंगे। मर्द रेशमी कपड़े पहनेंगे। औरतें मर्दों की शक्लें इख़्तियार कर लेंगी। शौहर बीवियों की इताअत करने लगेंगे।

प्रश्नः आखिरत कब आएगी?

उत्तरः इसकी जानकारी अल्लाह के अलावा किसी को नहीं है।

प्रश्नः क़यामत के दिन मुजरिमों की क्या हालत होगी?

उत्तरः उस दिन मुजरिमों के मुँह बन्द कर दिए जाएँगे और उनके जिस्म के आजा (अंग) उनके बुरे कामों की गवाही देंगे।

प्रश्नः कुरआन मजीद के मुताबिक आखिरत में कौन लोग कामयाब करार दिए जाएंगे?

उत्तरः जिन लोगों ने दुनिया में अल्लाह के बताए हुए रास्ते की पैरवी की होगी और नेक आमाल किए होंगे, आखिरत में ऐसे ही लोग कामयाब करार दिए जाएँगे।

प्रश्नः क़यामत के दिन की रुसवाई से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

उत्तरः हमें दुनिया में अल्लाह तआला के अहकाम पर सच्चे दिल से अमल करना चाहिए। इबादतों की पाबन्दी, मुआमलात की सफाई, अख़्लाक़ और किरदार में पाकीजगी, इन्सानों से हमदर्दी और तमाम हुकूक की अदाएगी करनी चाहिए।

प्रश्नः दोजख किस जगह का नाम है?

उत्तरः दोजख एक हौलनाक जगह का नाम है जहाँ आग ही आग है। अल्लाह के नाफरमान और सरकश लोगों को उसमें डाला जाएगा। उनको वहाँ सख्त तकलीफों और अजाब

का सामना करना पड़ेगा। वहाँ की मुसीबतों का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता।

प्रश्नः कौन लोग दोजख़ के हक़दार करार पाएंगे और उनके खाने पीने के बारे में क्या फरमाया गया है?

उत्तरः कुरआन मजीद की सूरः निसा, आयत– 14 में है कि ''जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल0) की नाफरमानी करेगा और अल्लाह की कायम करदा हदों को तोड़ेगा उसे दोजख में डाला जाएगा जहाँ वह हमेशा रहेगा।'' उनका खाना जक्कूम के पेड़ की तरह होगा और पीने के लिए गरम पानी (और पीप वगैरा) दिया जाएगा।

प्रश्नः दुनिया में नेक काम करने वालों को क्या इनाम मिलेगा?

उत्तरः नेक लोगों को जन्नत में जगह दी जाएगी। जहाँ अल्लाह की बेशुमार नेअमतें होंगी और वे लोग वहाँ ऐशो–आराम से रहेंगे।

प्रश्नः जन्नत किस जगह का नाम है?

उत्तरः जन्नत के लफ़्ज़ी मानी बाग के हैं। ये एक बुलन्द जगह होगी जिसमें बाग ही बाग होंगे, जिसकी खूबियों का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता। वहाँ हर तरह की खुशियाँ और ऐशो–आराम होगा।

प्रश्नः जन्नत के बारे में क्या तफ़्सीलात बयान की जाती हैं?

उत्तरः इस बारे में अल्लाह के रसूल (सल्ल0) का कहना है कि ''यह वह जगह है कि जिसे किसी आँख ने नहीं देखा और न कोई जानता है कि अल्लाह ने अपने बन्दों के लिए इसमें क्या–क्या नेअमतें तैयार कर रखी हैं'' फिर भी इसकी जो तफ़्सीलात बयान हुई हैं, उनके मुताबिक ये बेहद आराम की जगह होगी और ईमान वाले इसमें खुशी और चैन की ज़िन्दगी गुजारेंगे।

प्रश्नः जन्नत का मक़ाम हासिल करने के लिए प्यारे नबी (सल्ल0) ने किन दो बातों की तम्बीह की है?

उत्तरः अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने इस बारे में फरमाया कि ''जिस शख़्स ने मेरी खातिर दो चीजों की हिफ़ाज़त की मैं उसके लिए जन्नत की जमानत देता हूँ। एक ज़बान की हिफ़ाज़त और दूसरी शर्मगाह की हिफ़ाज़त।''

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

ख़त्म न होने वाला सफ़र-तैयारी क्या?

सैय्यद सुफ़ियान अहमद नदवी लखनवी

एक रोज़ एक बादशाह ने अपने दरबार में एक अजीब व ग़रीब सा फ़रमान जारी किया कि पूरी रिआया में जितने भी बेवकूफ़ लोग हैं उन सबको इकट्ठा किया जाए, फिर उनमें आपस में उनकी बेवकूफ़ियों का एक मुक़ाबला कराया जाए और उस मुक़ाबले में जो सबसे अव्वल आए उसे ''सबसे बड़े बेवकूफ़'' होने के सम्मान से नवाज़ा जाए और एक क़ीमती हीरे–जवाहेरात से बना हुआ हार सम्मान के तौर पर उसे दिया जाए।

बादशाह ने पूरे मुल्क में इस ऐलान को आम करा दिया और मुक़ाबले के लिए एक दिन भी तय कर दिया। फिर क्या था इस भारी इनाम के लालच में मुक़ाबले के दिन सैकड़ों बेवकूफ़ बादशाह के दरबार में इकट्ठे हो गये। बादशाह ने उनमें आपस में बेवकूफ़ी के मुख़्तलिफ़ मुक़ाबले करवाए, आख़िरी मरहले में एक शख़्स कामयाब हुआ तो उसे बेवकूफ़ों के सबसे बड़े सम्मान से नवाज़ा गया और बादशाह ने हीरे–जवाहेरात से बना हुआ एक बहुत ही क़ीमती हार उसे सम्मान के तौर पर दिया। वह शख़्स बहुत ख़ुश हुआ और ख़ुशी–ख़ुशी अपने घर वापस लौट गया।

एक ज़माना गुज़र गया, और एक लम्बे अर्से के बाद वह बादशाह बहुत बीमार हो गया और ऐसा बीमार हुआ कि मरने के क़रीब पहुँच गया। इसकी ख़बर उस सबसे बड़े बेवकूफ़ को लगी तो वह भी बादशाह का एहसानमन्द होने की वजह से बादशाह से मिलने के लिए महल पहुँचा। दरबान ने उसे पहचान लिया तो उसे बादशाह से मुलाक़ात की इजाज़त दे दी। वह शख़्स बादशाह के पास गया और उसके हाल–अहवाल मालूम किये। बादशाह ने कहाः तुम एक ऐसे शख़्स के हाल–अहवाल पूछ रहे हो जो एक ऐसे सफ़र का मुसाफ़िर बनने जा रहा है जहाँ से उसका वापस होना मुमकिन नहीं है। बेवकूफ़ ने बड़े ताज्जुब से पूछा कि ''क्या आप वाक़ई उस सफ़र से वापस नहीं आ पाएंगे?'' बादशाह ने मायूसी भरे अन्दाज़ में कहाः हाँ वाक़ई ऐसा ही है, इस सफ़र से वापसी मुमकिन नहीं है। तो बेवकूफ़ ने कहाः फिर तो आप ने वहाँ पहुँचने से पहले ही अपने आराम व आसाइश से मुताल्लिक़ तमाम सामान वहाँ भिजवा दिया होगा। और अपने लिए एक शानदार महल और ख़िदमत करने वाले भी वहाँ पहुँचवा दिये होंगे, अपने रहने–खाने से मुताल्लिक़ चीज़ें भी आपने वहाँ एक अच्छी तादाद में रखवा दी होंगी, ग़रज़ कि अपनी ऐश व इशरत से मुताल्लिक़ तमाम सामान वहाँ पर पहले से तैयार कर लिया होगा।

उस बेवकूफ़ शख़्स की बात सुन कर बादशाह बहुत ग़मगीन हो गया और फूट–फूट कर रोने लगा और कहने लगाः ''नहीं! नहीं! मैंने ऐसा कुछ भी नहीं किया, मैंने कोई तैयारी नहीं की, अपनी राहत व आराम का कोई भी सामान मैंने वहाँ नहीं भिजवाया, मैं बिल्कुल ख़ाली हाथ इस सफ़र पर रवाना हो रहा हूँ। और इस सफ़र से वापसी भी मुमकिन नहीं है।

''बेवकूफ़ शख़्स हैरान व परेशान होकर कहने लगाः वाह! ऐसा कैसे हो सकता है! आप तो बहुत अक़लमन्द और समझदार इन्सान लगते हैं! आप ऐसा कैसे कर सकते हैं कि अपने सफ़र के लिए कोई तैयारी ही न करें, वह

भी सफ़र ऐसा कि जिस से वापसी ही मुमकिन नहीं। बादशाह ने फिर अफ़सोस के साथ कहाः नहीं, वाक़ई मैंने वहाँ के लिए कुछ भी इन्तिज़ाम नहीं किया है।

वह बेवक़ूफ़ शख़्स मायूस होकर जाने लगा और जाते–जाते उसने अपने गले से वह क़ीमती हीरे–जवाहेरात से बना हुआ हार उतारा जो उसे सबसे बड़े बेवक़ूफ़ होने के सम्मान के तौर पर दिया गया था, और उसे बादशाह के गले में डालते हुए बोला कि ''तब तो इस हार के सबसे बड़े हक़दार आप ही हैं कि आपने सब कुछ जानते–बूझते हुए भी अपने इस न ख़त्म होने वाले सफ़र की कोई तैयारी ही न की। और इसीलिए आपको ही सबसे बड़े बेवक़ूफ़ का ख़िताब मिलना चाहिए।

''हमें ग़ौर व फ़िक्र करनी चाहिए कि कहीं हम भी इस बादशाह की तरह ग़फ़लत के शिकार तो नहीं हो रहे हैं, और सब कुछ जानते–बूझते हुए सबसे बड़े बेवक़ूफ़ होने का ख़िताब हासिल करने की कोशिश तो नहीं कर रहे हैं!!

यह क़िस्सा सिर्फ़ एक ख़याली क़िस्सा भी हो सकता है लेकिन यह क़िस्सा हमारी सोच को झिंझोड़ने वाला और हमारे आमाल को सामने लाने वाला है कि हम इस दुनिया में क्या कर रहे हैं। हम सबके लिए भी एक तय सफ़र है जो हमारी पैदाईश से शुरु हो चुका है। और हमारी विलादत के वक़्त की अज़ान से इस सफ़र का सायरन भी बज चुका है, बस किस वक़्त ज़िन्दगी का ड्राइवर यानी ख़ालिक़े क़ायनात हमारी गाड़ी को आगे बढ़ा दे और हम अपना सामाने सफ़र यहीं का यहीं छोड़ कर आगे चल दें, फिर हमारी ज़िन्दगी की ट्रेन न रुकने वाली होगी और न वापस पलटने वाली।

हमें सोचना चाहिए कि दुनिया में हम क्या–क्या करते हैं और दुनिया के लिए कैसे–कैसे इन्तिज़ामात करते हैं।

घर से बाहर निकलते हैं तो गाड़ी में पेट्रोल चेक करते हैं कि कहीं रास्ते में बन्द न हो जाए, अपनी जेब चेक करते हैं कि रास्ते में कौन सी ज़रूरत पेश आ जाए तो थोड़ी–बहुत ज़रूरत की रक़म जेब में मौजूद हो।

परीक्षाओं की तैयारी करते हैं तो परीक्षा में शिरकत करने के लिए आई कार्ड, पेन वग़ैरह पहले से तैयार रखते हैं और सबक़ को अच्छी तरह याद करते हैं और लिखने की भरपूर प्रेक्टिस भी करते हैं।

घर में किसी की शादी हो तो उस से मुताल्लिक़ तमाम इन्तिज़ामात को मद्दे नज़र रखते हैं कि महफ़िल कहाँ मुनअक़िद होगी, मेहमानों के बैठने का इन्तिज़ाम कहाँ होगा, खाने में क्या–क्या चीज़ें पेश की जाएंगी, पानी–रौशनी–हवा का क्या–क्या इन्तिज़ाम होगा, दीगर बहुत से इन्तिज़ामात कैसे–कैसे होंगे इन सबकी पहले से प्लानिंग और तैयारी की जाती है।कोई दुकान खोलना हो या कोई कारोबार शुरु करना हो तो सामाने तिजारत कहाँ से लिया जाए, कब और कितना लिया जाए, तजुर्बेकार लोगों से क्या–क्या मालूमात जुटाई जाएं और किस जगह पर दुकान या शो–रूम खोला जाए और कौन सी जगह पर कारोबार हरकत में आएगा और चलेगा। यह सब पहले से मालूम करना और इन सबके इन्तिज़ामात की पहले से ही तैयारी करना पड़ती है।

दुनिया का कोई सफ़र हो तो उसके लिए भी सोचना पड़ता है कि कब जाना है और कैसे जाना है? ट्रेन से, हवाई जहाज़ से, बस से या फिर किसी दूसरी सवारी के ज़रिये और वहाँ जाकर रुकने से मुताल्लिक़ चीज़ें कि लिबास कितने लेकर जाएं, और तमाम ज़रूरत की छोटी–बड़ी चीज़ों की फ़िक्र की जाती है ताकि सफ़र में किसी

तरह की कोई मुश्किल न पेश आए।यह सब दुनिया के काम और दुनिया के सफ़र हैं, इनकी तैयारी तो ज़ोर–शोर से और बाक़ायदगी के साथ बड़े एहतिमाम से की जाती है। लेकिन एक वह सफ़र जो आख़िरत का सफ़र है और वह आख़िरी होगा, जिस सफ़र की तैयारी के लिए अल्लाह ने हमें मौक़ा दिया है, इस सफ़र पर हम ग़ौर करें कि हम ने क्या तैयारी की, और क्या आगे भेज रहे हैं और वहाँ पहुँच कर हमें कौन–कौन सी सहूलतें और कौन–कौन सी आसानियाँ फ़राहम होंगी, कौन सी नेकी हमारे काम आएगी और किन–किन बुरी चीज़ों से हमें दुनिया में बचना होगा। हमें सोचना होगा कि हमारे लिए दुनिया में कौन से बुरे आमाल मना हैं जो हमारी नेकियों को आख़िरत में खा न सकें और हमारी नेकियाँ महफ़ूज़ रह सकें।

हमारे लिए यह दुनिया ही एक दारुल अमल है, इसी में हमको सब कुछ तैयारी करनी है, हमें इबादात का भी ख़याल रखना है, हमें मामलात पर भी ग़ौर व फ़िक्र करनी है, और मुस्तहेब्बात का भी ध्यान रखना है। जैसा कि अल्लाह तआला का फ़रमान हैः ''जो शख़्स आख़िरत की खेती चाहता है हम उसके लिए उसकी खेती में मज़ीद इज़ाफ़ा फ़रमा देते हैं और जो दुनिया की खेती चाहता है उसे दुनिया ही में दे देते हैं मगर आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं है।''

(सूरः शूरा, आयतः 20)

तो हमें भी इस दुनिया के आमाल से अपनी आख़िरत की खेती को सजाना–संवारना होगा।

लिहाज़ा हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम अपनी नमाज़ों से, अपने रोज़ों से, अपनी ज़कात व सदक़ात से, अपनी तिलावते कुरआन से, अपने मामलात से, अपने हुक़ूक़ व फ़रायज़ की अदायगी से और अपने दीगर आमाल से अपने आख़िरत के ठिकाने को सजाएं –संवारें और इस न ख़त्म होने वाले सफ़र की ज़िन्दगी को ख़ूबसूरत से ख़ूबसूरत बनाने की फ़िक्र में लग जांए। न जाने कब किसका वक़्त आ पहुँचे और उसका यह आख़िरी सफ़र शुरु हो जाए।

अल्लाह तआला हम सबको अपने आख़िरी सफ़र की भरपूर तैयारी करने वाला बनाए और हमारी दुनिया व आख़िरत दोनों को बेहतर बनाए। आमीन या रब्बल आलमीन।

❖❖❖

पृष्ठ.....25... का शेष

संदेश जाए कि हर कीमत पर क़ानून व्यवस्था क़ायम की जाएगी। ऐसा न होने की वजह से अपराधियों और दोषी अधिकारियों के हौसले बढ़ते हैं और ऐसी हिंसक घटनाएं रुकने के बजाय बढ़ती चली जाती हैं।

हमें चाहिए कि हम सरकारों पर दबाव बनाएं कि वे पीड़ितों को जल्द न्याय दिलाने में राजनीतिक स्वार्थ को आड़े न आने दें और पीड़ितों को समय पर न्याय मिले और अपराधियों को जल्द सजा मिले।

हर स्तर पर संवाद बढ़ाने और गलत धारणाओं का निवारण करने में प्रेस व मीडिया को भी शामिल किया जाना चाहिए। पीड़ितों के लिए न्याय की आवाज उठाने वाले, आपसी विश्वास बढ़ाने वाले मीडिया को प्रोत्साहित करना भी इस पुनीत कार्य में बहुत मददगार साबित होगा ।

मेरा यह विश्वास है कि हम सब देशवासी संगठित हो कर इसके लिए प्रयास करें तो इस चुनौती का कामयाबी से मुकाबला कर सकते हैं। देश को प्रगति और समृद्धि की राहों पर ले जाने का यही एक रास्ता है।

(साभार ''कान्ति'' नई दिल्ली, दिसम्बर–2011 से ग्रहीत)

❖❖❖

नई जनरेशन और मोबाइल कल्चर

क़ारी मुहम्मद युसुफ़ अज़ीज़ी

दुनिया के बदलते हुए मानचित्र में अगर किसी एक चीज़ ने इन्सानी ज़िन्दगी के हर गोशे को अपनी लपेट में ले लिया है तो वह है ''मोबाइल फ़ोन'' यह छोटा सा यंत्र जो कभी सम्पर्क का साधन था, अब पूरी दुनिया की खिड़की बन चुका है, यह वह जादुई यंत्र है जिसने इन्सान को एक क्षण में हज़ारों मील दूर ले जाने की क्षमता दे दी है, मगर इसी के साथ यह धीमे धीमे इन्सान के अन्दर से इन्सानियत, समाजी चेतना, ख़ानदानी मूल्यों को चाटता जा रहा है। नई जनरेशन के हाथों में जब यह मोबाइल एक खिलौना नहीं बल्कि ज़िन्दगी का अनिवार्य अंश बन गया है तो गोया एक नये समाजिक परिवर्तन की बुनियाद पड़ गई। मोबाइल कल्चर का आगमन बीसवीं शताब्दी के अन्त में टेक्नोलाजी की क्रान्ति के रूप में हुआ, मगर 21वीं शताब्दी की तेज़ रफ़तार ज़िन्दगी ने उसे इन्सान का दूसरा रूप बना दिया। आज एक बच्चा जो बोलना सीख रहा होता है, उसके हाथ में खिलौने की जगह मोबाइल होता है, नवजवान जो कभी दोस्तों के साथ खेल के मैदान में अपनी मेहनतें लगाता था, अब स्क्रीन के सामने अपनी आँखों और दिमाग़ को समेट कर बैठ गया है, माँ–बाप जो कभी अपनी औलाद के स्वभाव और रवैये के क़रीब होते थे, अब वाट्स एप ग्रुप और यूट्यूब में स्वयं भी गुम हैं। यह सूरते हाल एक सामूहिक परिवर्तन को चिन्हित करती है जिसे ''मोबाइल कल्चर के नाम से याद किया जाता है। एक ऐसा कल्चर जिसने नई पीढ़ी की सोच और पारम्परिक मूल्यों की नये सिरे से रचना की है।

अगर ग़ौर किया जाए तो मोबाइल कलचर ने केवल सम्पर्क को ही आसान नहीं बनाया बल्कि इन्सानी ज़िन्दगी के पूरे ढाँचे को हिला कर रख दिया, तालीम, तफ़रीह, दोस्ती, मुहब्बत ख़रीदारी, मज़हब, सियासत, यहाँ तक कि इबादत हर चीज़ अब मोबाइल स्क्रीन के गिर्द घूम रही है, मगर प्रश्न यह है कि क्या यह क्रान्ति वास्तव में मानव उन्नति की प्रतीक है या यह एक ऐसी ज़नज़ीर है जिसे नई पीढ़ी ने अपनी इच्छा से गले में डाल रखा है? नई पीढ़ी की ट्रेज्डी यह है कि उसने मोबाइल को ''सहूलत'' नहीं बल्कि ज़रूरत समझ लिया है, आज के नवजवानों के लिए मोबाइल बन्द होना ऐसे है जैसे साँस रुक जाना, इन्टरनेट के बिना एक पल गुज़ारना अज़ाब बन चुका है। सोशल मीडिया के रसिया नवजवान अपनी ज़िन्दगी के बहुमूल्य क्षण लाइक्स, कमेन्ट्स, और फ़ालोवर्स की भेंट चढ़ा रहें हैं, वह अपने व्यक्तित्व की पहचान वास्तविक दुनिया में नहीं बल्कि स्क्रीन पर मौजूद प्रोफ़ाइल में ढूँढ़ रहे हैं। इन्सटा ग्राम के फिलटर्स ने उनके चेहरों पर बनावटी मुस्कुराहटें सजाई हैं और टिक टॉक ने उनके अंदाज़े बयान को बनावटी बना दिया है, इस मोबाइल बल्चर ने नई पीढ़ी के व्यवहार में जो मनोवैज्ञानिक परिवर्तन पैदा किया है वह ज़्यादा ख़तरनाक है, अब बात चीत किताबी नहीं तस्वीरी हो गई है, शब्द कम हो गये हैं, और विचार एवं अभिव्यक्ति इमोजी में सिमट गया है, दोसतियाँ लाइक्स पर और दुशमनियाँ आलोचना

पर टूटती हैं, आपसी बातचीत की जगह चैट, मुलाक़ात की जगह वीडियो काल, अध्ययन की जगह शार्ट्स और शिक्षा की जगह अफवाहें आ गई हैं, शिक्षा क्षेत्र भी मोबाइल के अधीन आ गया है, अब आनलाईन क्लासेज और डिजिटल लर्निंग के नाम पर विद्यार्थियों ने मेहनत के बजाए नक़ल को अपना लिया है। जानकारी प्राप्त करने की क्षमता बढ़ी है प्ररन्तु ज्ञान की गहराई कम हो गई है। जहाँ पहले किताब के अध्ययन से ज़ेहन में चिन्तन मनन की रूचि पैदा होती थी अब सर्च इन्जन के एक क्लिक से तुरन्त जवाब मिलने की आदत ने चिन्तन मनन का दरवाज़ा बन्द कर दिया है। मोबाइल कल्चर ने ख़ानदानी रिश्तों की बुन्यादों को भी कमज़ोर कर दिया है। माँ—बाप जो कभी बच्चों के साथी और रहनुमा होते थे अब ज़्यादातर मोबाइल की दुनिया में खोये रहते हैं, एक ही घर में बैठे लोग एक दूसरे से बात नहीं करते, बल्कि एक दूसरे को मेसेज करते हैं खाने की मेज़ पर अब बात चीत नहीं, नोटीफिकेशन हैं, मुहब्बत के इज़हार के बजाए इमोजी का सहारा लिया जाता है, यह सूरते हाल एक ऐसे समाज की ओर इशारा कर रही है जहां संबंध वरचुवल होंगे और भावनाएं बनावटी, नई पीढ़ी वास्तविक ज़िन्दगी की कठिनाईयों से अपरिचित हो चुकी है, उन्हें इन्तिज़ार करना पसन्द नहीं क्योंकि इन्टरनेट ने उन्हें तात्कालिक परिणाम का आदी बना दिया है, यह आदत ज़िन्दगी के बड़े फैसलों में भी जल्द बाज़ी पैदा कर रही है, चाहे वह तालीम का इंतिख़ाब हो, रिश्तेदारी हो या कैरियर का फ़ैसला, मोबाइल कलचर ने नैतिकता पर भी गहरा असर डाला है, अब नवजवानों के लिए लज्ज़ा, आत्म सम्मान का संकोच बिल्कुल नहीं रहा सब सीमाएं टूट गईं, सोशल मीडिया की आज़ादी के नाम पर बेहयाई निर्लज्जता फैल रही है, प्राइवेट ज़िन्दगी की सीमाएं समाप्त हो चुकी हैं, ''शेयर'' के बटन ने लज्जा के दरवाज़े तोड़ दिये हैं। नवजवान वर्ग ''ट्रेण्ड'' के अनुसार सोचता है, चाहे वह धर्म के विरुद्ध हो या समाज के, यह वह अवसर है जहाँ माता पिता, गुरु, और समाज को गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है, हमें यह समझना होगा कि मोबाइल एक यंत्र है मगर नई पीढ़ी ने उसे अपना मालिक बना लिया है, अब आवश्यकता है कि हम इस मालिक को दोबारा नौकर बनाएं।

टेक्नालोजी को इन्सान के अधीन होना चाहिए न कि इन्सान, टेक्नालोजी के अधीन, मगर यह तभी संभव होगा जब हम मोबाइल के उचित प्रयोग की ट्रेनिंग दें, नई पीढ़ी को यह सिखाना होगा कि मोबाइल ज्ञान, उन्नति और सम्पर्क का साधन तो हो सकता है मगर ज़िन्दगी का उद्देश्य नहीं, हमें स्कूलों और कालेजों में डिजिटल एथिक्स को अपने पाठ्यक्रम (अर्थात नैतिकता, आचार, विचार, नीतिशास्त्र) का भाग बनाना चाहिए, माँ—बाप को चाहिए कि वह स्वयं एक आदर्श बनें क्योंकि जब बाप स्वयं खाने के बीच फोन प्रयोग करेगा तो बेटा भी वैसा करेगा, हमें मोबाइल फ़िरी टाइम तै करने होंगे, घर में आपसी वार्तालाप, खेल अध्ययन और इबादत को फिर से ज़िन्दा करना होगा, नवजवानों को वास्तविक मित्रता, शारीरिक व्यायाम, प्रकृति से जुड़ने का अवसर देना होगा, क्योंकि इन्सानी ज़ेहन केवल डेटा से नहीं बल्कि अनुभवों, निरीक्षणों और संबंधों से उन्नतिशील होता है, शासन प्रशासन को भी अपने स्तर पर इस कलचर के सुधार के लिए प्रयास करना होगा, सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर

निर्लज्जता, नफ़रत और फेक न्यूज के प्रचार प्रसार की रोकथाम के लिए कठोर क़ानून की आवश्यकता है। इसके साथ ऐसे शैक्षणिक प्रोग्राम को परिचित कराना चाहिए जो नई पीढ़ी को टेक्नालोजी के सकारात्मक प्रयोग की प्रेरणा दें, यह भी सच है कि मोबाइल के बिना नई दुनिया की कल्पना संभव नहीं यह यंत्र सम्पर्क, व्यापार, मेडिकल, शिक्षा, प्रबन्ध के कामों में क्रन्ति ला चुका है मगर बुनियादी प्रश्न यह है कि क्या हम उसे अपनी सेवा के लिए प्रयोग कर रहे हैं या उसकी सेवा में हम लगे हैं? यदि हमने सन्तुलन स्थापित न किया तो आने वाली पीढ़ी एक ऐसी दुनिया में परवान चढ़ेगी जहां इन्सान ''डिजिटल ग़ुलाम'' होगा, वह स्वयं अपने यंत्र का मोहताज, अपनी इच्छाओं का क़ैदी और अपनी पहचान (परिचय) का मुसाफिर, यह समय है कि नई पीढ़ी को स्वयं चेतावनी दी जाए उन्हें बताया जाए कि मूल शक्ति स्क्रीन में नहीं बल्कि मन में है, और मूल सम्मान फ़ालोवर्स की नहीं बल्कि चरित्र की है, टेक्नालॉजी को अपनाना उन्नति है, मगर उसमें खो जाना विनाश, दुनिया की मौजूदा सूरते हाल इस बात की गवाही दे रही है कि मोबाइल कल्चर ने इन्सानी रिश्तों में फ़ासले बढ़ा दिये हैं और दिलों में दूरी भी पैदा कर दी है, जो व्यक्ति सुबह उठते ही फोन चेक करता है और रात को उसकी रोशनी में सोता है वह धीरे–धीरे अपने अन्दर का सुकून खो रहा है, हमें याद रखना चाहिए कि टेक्नालोजी कभी इन्सान की जगह नहीं ले सकती, एक माँ की दुआओं की छाया, एक दोस्त के कन्धे की गर्म जोशी (उल्लास) और एक उस्ताद की नसीहत, यह सब वह वास्तविक्ताएं हैं जो किसी स्क्रीन पर मयस्सर (उपलब्ध) नहीं होतीं, नई पीढ़ी को अगर वास्तविक सफल, आचारवान, और प्रभुत्वशाली बनाना है तो हमें उन्हें दोबारा ''इन्सानी दुनिया'' में लाना होगा, मोबाइल से दोस्ती अच्छी है मगर उसकी ग़ुलामी ख़तरनाक, यह निर्णय नई पीढ़ी को स्वयं करना होगा कि वह टेक्नालोजी के साथ जीना चाहती है या मरना, यह समय सोचने का है कि हम किस दिशा में जा रहे हैं, चेतना की ओर या अचेत्ना की ओर? उन्नति की ओर या पतन की ओर?

अन्त में एक कड़वी बात मगर सत्य पर आधारित वास्तविकता यह है कि दुनिया में जो क़ौमें टेक्नालोजी का निर्माण कर रही हैं वही उसे दूसरों के विनाश के लिए प्रयोग भी कर रही हैं।

हमें अपने बच्चों को केवल मोबाइल प्रयोग करना नहीं बल्कि उसकी वास्तविकता समझना सिखाना होगा, क्योंकि जो क़ौमें यंत्र की वास्तविकता को नहीं समझतीं, वह स्वयं यंत्र बन जाती हैं, नई पीढ़ी के हाथ में अगर मोबाइल, ज्ञान, नैतिकता और मानव सेवा का साधन बन जाए तो यही यंत्र उनके लिए रोशनी बन सकता है। यदि वह उसे समय का क़ातिल और इच्छा का खिलौना बना दें तो यही मोबाइल उनकी योग्यताओं और क्षमताओं का क़ातिल बन जाएगा, ज़िन्दगी की वास्तविक आत्मा स्क्रीन के पीछे नहीं, हक़ीक़त की दुनिया में है इसलिए अब समय आ गया है कि हम अपनी नई पीढ़ी से यह कहें ''मोबाइल को ज़िन्दगी का हिस्सा बनाओ, ज़िन्दगी को मोबाइल का नहीं, यह पैग़ाम है जो आज के ज़माने में सबसे ज़्यादा मानी रखता है, क्योंकि आने वाली दुनिया उन्हीं हाथों से बनेगी जो मोबाइल पकड़ते हैं, मगर प्रश्न यह है कि वह उसे मानवता के निर्माण के लिए पकड़ेंगे या अपने विनाश के लिए?

(साभारः दैनिक आग उर्दू, लखनऊ)

❖❖❖

अल्लाह के रसूल सल्ल० और पड़ोसी

(इदारा)

पड़ोसी का दर्जा इस्लाम में बहुत बड़ा है। घर के करीब रहने वाले पड़ोसी कहलाते हैं। घर के आस–पास रहने वाले लोग कुछ दूरी पर क्यों न रहते हों वे भी पड़ोसी हैं। उनका मजहब दूसरा है। उनका रंग अलग है। उनकी नागरिकता अलग है। लेकिन आपके मुहल्ले में रहते हैं तो वे आपके पड़ोसी हैं।

मुहल्ला शहर का एक हिस्सा होता है, जो कुछ घरों से बनता है। हर घर दूसरे घर का पड़ोसी है। जब मुहल्ले और कालोनी के सारे लोग एक–दूसरे से मिल–जुलकर रहते हैं और हर पड़ोसी दूसरे पड़ोसी के अधिकारों को अदा करता है तो सभी संतुष्ट और खुश रहते हैं और एक–दूसरे के लिए पूरक बन जाते हैं। सब एक खानदान की तरह हो जाते हैं। इस तरह ऐसा मुहल्ला समाज का एक सक्रिय भाग बन जाता है और सकारात्मक कारवाईयों में महत्वपूर्ण रोल अदा करता है। अगर पड़ोसियों के मामलात ख़राब होते हैं तो जीना दूभर हो जाता है। सुकून ख़त्म हो जाता है, ऐसा मुहल्ला परेशानियों और दिक्कतों का जमघटा बन जाता है और विकास के बजाय बर्बादी का ज़रिया बन जाता है। इन कारणों से अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का पड़ोसियों के बेहतर संबंध की ओर बड़ा ध्यान था।

कुरआन में पड़ोसियों के अधिकारः–

कुरआने–करीम ने पड़ोसी से संबंध के सही होने को समाज के विकास का प्रतीक करार दिया है और पड़ोसी के अधिकारों और वाजिबात की यह हैसियत है कि उनको अदा किए बिना किसी मोमिन का इस्लाम भरोसे के क़ाबिल नहीं समझा जाता। सूरह निसा की कई आयतें पड़ोसी के अधिकारों के बारे में आई हैं।

अल्लाह की बन्दगी करो और उसके साथ किसी को साझी न बनाओ और अच्छा व्यवहार करो माँ–बाप के साथ, नातेदारों, अनाथों और मुहताजों के साथ, नातेदार पड़ोसियों के साथ और अपरिचित पड़ोसियों के साथ और साथ रहने वाले व्यक्ति के साथ और मुसाफिर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता, जो इतराता और डींगें मारता हो। (अन–निसाः 36)

पड़ोसियों के बारे में रसूल सल्ल0 की हिदायातः–

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने पड़ोसी के बारे में इतनी ताकीद की कि लगता था कि उसे वारिस होने वाले रिश्तेदार का दर्जा दे देंगे। अल्लाह के रसूल सल्ल0 कहते हैं जिबरील अलै0 ने मुझे पड़ोसी के बारे में बार–बार ताकीद करते रहे, यहां तक कि मुझे महसूस होने लगा कि पड़ोसी का हिस्सा विरासत में भी करार दे देंगे।

(अबू–दाऊदः 4158)

पड़ोसी को कष्ट पहुंचाने की सजाः–

इस्लाम में पड़ोसी से रिश्ता की अहमियत का अंदाज़ा लगाइये कि पड़ोसी को कष्ट देने वाले को उसकी दीनदारी और इबादत की बहुतायत भी सज़ा से नहीं बचा सकती। अल्लाह के रसूल (सल्ल0) के पास एक सज्जन आए और कहने लगे फुलां औरत की लंबी नमाज़ों, रोजे पे रोजों और सदक़ा व खैरात करने की हर

शेष पृष्ठ ....36....पर

बेटियाँ ख़ुदा की रहमत

(समाज में बेटियों के सम्मान और औरत के अधिकार पर इस्लाम ने दिया विशेष ध्यान)

अर्शिया रफ़ीक़

बेटियाँ सब के मुकद्दर में कहाँ होती हैं,
घर जो अल्लाह को प्यारा है, वहाँ होती हैं।

इस्लाम में बेटियों को बहुत अहमियत दी गई है। बेटियाँ जहाँ अल्लाह की रहमत होती है, वहीं माता–पिता के लिए जहन्नम से बचाव का कारण और जन्नत के प्राप्ति का रास्ता भी होती हैं। अल्लाह ने कुरआन में फरमाया है कि आसमानों और ज़मीन की सल्तनत और बादशाहत केवल अल्लाह के लिए है, वह जो चाहे पैदा करता है और जिसको चाहे बेटियाँ देता है, और जिसको चाहे बेटे और बेटियाँ देता है, और जिसको चाहे बाँझ कर देता है। हालाँकि ये सब कुछ अल्लाह के हाथ में है और अल्लाह की हिकमत और मस्लहत पर आधारित है। जिसको जो मुनासिब समझता है, वह उसे दे देता है।

(सूरः शूरा)

अल्लाह ने दुनिया में ऐसा सिस्टम क़ायम किया है कि मर्द और औरत दोनों एक–दूसरे पर निर्भर हैं। न तो मर्द औरत के बिना पूरा है और न ही औरत मर्द के बिना। यानी ये दोनों एक–दूसरे के मोहताज हैं, लेकिन हम अल्लाह की हिकमत और मस्लहत के विपरीत सोचते हैं और अपनी भावनाओं का इज़हार करते हैं। जब किसी के घर में बेटा पैदा होता है तो खुशी से झूम उठते हैं, मिठाईयाँ बाँटते हैं, नज़र–नियाज़ करते हैं, लेकिन जब उसी घर में बेटी पैदा होती है तो पूरे परिवार में खामोशी छा जाती है और सबके माथे पर शिकन आ जाती है।

ऐसा लगता है कि उनके घर में कोई पैदा नहीं हुआ, बल्कि किसी की मौत हो गई है। कई परिवार ऐसे होते हैं जो इस मसले पर रिश्ते तोड़ लेते हैं। पति अपनी पत्नी को छोड़ कर चला जाता है और इस सबका दोषी अपनी पत्नी को ही ठहराता है।

बेटियाँ अल्लाह की तरफ़ से दी गई रहमतें होती हैं। उनके साथ नर्मी से पेश आना चाहिए और इन रहमतों के साथ कभी भी खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि हम अल्लाह की रहमतों से महरूम हो जाएं। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने फरमाया कि हज़रत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया, ''जिस बाप की भी दो बेटियाँ बालिग़ हो जाएं और वह उनके साथ हुस्ने–सुलूक करे, आदाब सिखाए, अच्छी तालीम दे, जब तक वो बेटियाँ उसके साथ रहें या बाप उन बेटियों के साथ रहे, तो ये बेटियाँ उसे ज़रूर जन्नत में दाख़िल करवाएंगी।''

(सुनन–ए–इब्ने–माजा)

बेटी की मुस्कान वीरान घर को भी खुशियों से भर देती है। बेटियाँ फूलों की तरह होती हैं और जब ये फूल दूसरे बगीचे में भी उगते हैं तो वह बगीचा भी खूबसूरत और खुशबू से महकता है।

आज के इस भौतिकवाद के दौर में लोग समझते हैं कि बेटियाँ बाप पर बोझ होती हैं, जबकि यह उनकी ग़लत सोच होती है, क्योंकि जिस घर में बेटियाँ होती हैं, वहाँ रहमतें बरसती रहती हैं और बेटी जब परिवार में होती है तो दिलों पर राज करती है। बहन–भाई के लिए सच्ची और ईमानदार दोस्त बन कर रहती है, माँ का हाथ बन कर रहती है, पत्नी बन कर हमेशा साथ निभाने वाली होती है, और जब माँ बनती है तो उसका रुतबा इतना ऊँचा होता

है कि अल्लाह जन्नत को उसके क़दमों में डाल देता है। इसी कारण मेरा कहना है कि हमें अपने बेटों की तरह अपनी बेटियों की परवरिश भी बड़ी धूमधाम से करनी चाहिए। उन्हें अच्छे आदाब सिखाने चाहिए, उन्हें बेहतरीन तालीम देनी चाहिए ताकि बेटी आख़िरत में हमारे लिए नजात का कारण बनें, हमें बेटी की पैदाईश पर गमगीन नहीं होना चाहिए बल्कि फ़ख्र से यह कहना चाहिए कि मेरे घर में अल्लाह की रहमत नाज़िल हुई है।

कई लोग यह समझते हैं कि बेटियाँ बड़ी हो कर दूसरों की सम्पत्ति बनती हैं इसलिए उन्हें तालीम वगैरह नहीं देनी बाहिए। उनकी यह सोच भी नकारात्मक है, क्योंकि जब हम अपनी बेटी को दूसरे की संपत्ति समझकर तालीम नहीं देंगे तो दूसरा अपनी बेटी को, जो हमारी बहू बनेगी कैसे तालीम देगा और हम कैसे यह कह सकेंगे कि हमारी बहू कितनी शिक्षित है? ज़मान–ए–जाहिलियत की तरह आज भी औरत जुल्म–व–सितम की चक्की में पिसी हुई है और लोग बेटी की पैदाइश को अपनी बेइज़्ज़ती समझते हैं। हालांकि विभिन्न देशों में औरत की इज़्ज़त और उसे अधिकार दिलाने के लिए कई क़ानून बनाए गए हैं, वहीं इन क़ानूनों की धज्जियाँ भी उड़ाई जा रही हैं।

पहले दिन से ही इस्लाम औरत के धार्मिक, सामाजिक, क़ानूनी, संवैधानिक और प्रशासनिक भूमिका को न सिर्फ स्वीकार किया है बल्कि सभी अधिकारों की गारंटी भी दी है।

जहाँ तक समाज में महिलाओं के रोल का सवाल है तो यह सच है कि दुनिया की आधी से अधिक आबादी औरतों पर आधारित है और मानवता की निरन्तरता के लिए बच्चों की परवरिश और देखभाल के लिए बेहतरीन तालीम और तरबियत जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए औरत का रोल माँ के रूप में बेहद अहम है। यानी औरत दुनिया के अस्तित्व के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसलिये हमें चाहिए कि हम अपनी बेटियों, बहनों और माँओं का सम्मान करें और उन्हें बेहतरीन तालीम दें। यदि एक औरत धर्म परस्त होती है तो पूरा समाज धर्म परस्त बन जाता है। अगर औरत खुद्दार होती है तो औलाद भी खुद्दार होती है। इसलिए हमें चाहिए कि हम इस्लाम पर अमल करके अपनी बेटियों को इज़्ज़त और सम्मान दें और खुद को जहन्नम की आग से बचाएं। इसी में दुनिया और आखिरत की भलाई है।

❖❖❖

पृष्ठ.....34... का शेष

ओर चर्चा है, लेकिन वह अपनी लम्बी जुबान से पड़ोसियों को तक़लीफ़ पहुंचाती है। अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने कहा वह जहन्नम में होगी। उन्होंने फिर पूछा फुलां औरत के सिलसिले में कहा जाता है कि वह रोजे कम रखती है, सदक़ा कम देती है, (नफ़्ल) नमाज़ें भी कम पढ़ती है। पनीर के कुछ टुकड़े सदक़ा कर देती है, लेकिन अपनी ज़बान से पड़ोसियों को तक़लीफ़ नहीं देती। अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने कहा वह जन्नत में होगी।

(मुंजरीः 2560)

पड़ोसी के अधिकारः–

अल्लाह के रसूल (सल्ल0) ने बहुत–सी हदीसों में पड़ोसियों के अधिकार बताए हैं। उनमें से कुछ विशेष अधिकार ये हैंः–

(1) सलाम करना, आदर करना
(2) खुशी से मिलना
(3) इयादत करना
(4) खुशी और ग़म में साथ देना
(5) कमियों को बर्दाश्त करना
(6) पड़ोसी की महरम औरतों से पर्दे का व्यवस्था करना
(7) ज़रूरत के समय मदद करना
(8) भलाई के जज़्बात का इजहार करना, नसीहत करना
(9) मुलाकात करना, हालात मालूम करना आदि।

❖❖❖

भारतीय संविधान की विशेषतायें

(अशरफ़ अली नदवी)

भारतीय संविधान वह सर्वोच्च कानून है जिसके आधार पर पूरे देश की शासन–व्यवस्था संचालित होती है। यह एक अत्यंत विस्तृत, सुविचारित और लिखित दस्तावेज है जिसमें सरकार की मौलिक संरचना, उसके विभिन्न अंगों के बीच शक्तियों का विभाजन, उनके अधिकार, कर्तव्य और कार्यप्रणालियाँ स्पष्ट रूप से निर्धारित की गई हैं। साथ ही, संविधान नागरिकों के मौलिक अधिकारों, मूल कर्तव्यों और राज्य के दायित्वों का पूरा ढाँचा निर्मित करता है, ताकि शासन और जनता दोनों के बीच संतुलन और एक स्पष्ट अनुशासन बनाए रखा जा सके। संविधान को 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा द्वारा औपचारिक रूप से स्वीकार किया गया। यह वह ऐतिहासिक दिन था जब वर्षों की चर्चा, मसौदा–निर्माण और बहस का परिणाम दुनिया के सबसे विस्तृत संविधान के रूप में सामने आया। इसे 26 जनवरी 1950 को पूरे भारत में लागू किया गया, और इसी दिन भारत एक संपूर्ण गणराज्य के रूप में स्थापित हुआ। अंगीकरण के समय इसमें 395 अनुच्छेद, 8 अनुसूचियाँ और लगभग 1,45,000 शब्द शामिल थे। शब्दों और विषय–वस्तु की दृष्टि से यह किसी भी देश का अब तक का सबसे लंबा और सबसे विस्तृत राष्ट्रीय संविधान माना गया। संविधान के निर्माण की प्रक्रिया अत्यंत विचारशील और लोकतांत्रिक थी। संविधान सभा ने कुल 11 सत्रों में, लगभग 2 वर्ष 11 महीने की अवधि में, 167 दिनों तक विभिन्न विषयों और अनुच्छेदों पर गहन चर्चा की। संविधान की प्रस्तावना भारत को संपूर्ण प्रभुत्व–संपन्न समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित करती है। यह प्रस्तावना देश के हर नागरिक को न्याय, स्वतंत्रता, समानता प्रदान करने और समाज में बंधुत्व की भावना विकसित करने की प्रतिबद्धता व्यक्त करती है। प्रस्तावना संविधान की मूल आत्मा मानी जाती है, जो राष्ट्र के आदर्शों और उद्देश्यों को स्पष्ट करती है। भारत की शासन प्रणाली संसदीय ढाँचे पर आधारित है, जिसमें संघीय स्वरूप तो है लेकिन कई महत्वपूर्ण पहलुओं में यह एकात्मक विशेषताएँ भी समेटे हुए है। संवैधानिक रूप से देश का प्रमुख राष्ट्रपति होता है, जो राष्ट्र का प्रथम नागरिक है। अनुच्छेद 79 के अनुसार भारत की संसद तीन अंगों राष्ट्रपति, राज्य सभा (*Council of States*) और लोकसभा (*House of the People*) से मिलकर बनती है। अनुच्छेद 74 (1) यह निर्धारित करता है कि राष्ट्रपति की सहायता और सलाह के लिए एक मंत्री परिषद होगी, जिसका नेतृत्व प्रधानमंत्री करेंगे। राष्ट्रपति अपने संवैधानिक कृत्यों के निर्वहन में उसी मंत्री परिषद की सलाह का पालन करेगा। इस प्रकार वास्तविक कार्यकारी शक्ति राष्ट्रपति के पास नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री और उनकी मंत्री परिषद के पास होती है, जो देश के शासन का संचालन करती है।

भारत का संविधान दुनिया के उन दुर्लभ दस्तावेजों में से है जो न केवल एक राष्ट्र के राजनीतिक स्वरूप को तय करता है बल्कि उसके सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक जीवन की दिशा भी निर्धारित करता है।

यह इस दृष्टि से अद्वितीय है कि इसे किसी परम्परा ने नहीं, बल्कि जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों ने बड़े विचार–विमर्श, बहस, तर्क और सुझावों के बाद तैयार किया। संविधान सभा में निर्वाचित सदस्यों के साथ–साथ बुद्धिजीवियों, पत्रकारों और आम नागरिकों की राय को भी महत्व दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप यह संविधान सचमुच जनता की इच्छाओं और आकांक्षाओं का प्रतिबिंब बन सका। संविधान की प्रस्तावना इसमें निहित संपूर्ण दर्शन का सार है।

13 दिसंबर 1946 को पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रस्तुत उद्देशिका बाद में प्रस्तावना का रूप लेकर संविधान की आत्मा बन गई। यह प्रस्तावना स्पष्ट करती है कि भारत किस दिशा में आगे बढ़ना चाहता है– न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की ओर। प्रस्तावना की शुरुआत ''हम भारत के लोग'' से होती है, जो यह स्पष्ट कर देती है कि इस राष्ट्र में शक्ति का सर्वोच्च स्रोत जनता है। जनता ने स्वयं अपने लिए एक शासन व्यवस्था बनाई, उसे अंगीकृत किया और स्वयं को उसके प्रति समर्पित किया। यही कारण है कि भारत में संविधान को ही सर्वोच्च माना जाता है और सारा शासन इसी के अधीन चलता है। भारत का संविधान समानता के सिद्धांत पर दृढ़ता से आधारित है। यह केवल सामाजिक समानता तक सीमित नहीं है, बल्कि आर्थिक अवसरों, राजनीतिक भागीदारी, विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता जैसे अनेक पहलुओं को समाहित किए हुए है। अनुच्छेद 14 से 18 तक समानता की व्यवस्था नागरिकों के लिए एक न्यायपूर्ण वातावरण निर्मित करती है और यह सुनिश्चित करती है कि भेदभाव रहित समाज की ओर अग्रसर हुआ जाए। वहीं स्वतंत्रता के अधिकार–जैसे बोलने, विचार प्रकट करने, संगठित होने तथा देश में कहीं भी रहने व घूमने की स्वतंत्रता नागरिक जीवन को गरिमा प्रदान करते हैं। लेकिन इन स्वतंत्रताओं के साथ संविधान ने यह भी सुनिश्चित किया है कि उनकी सीमा वहीं तक रहे जहाँ समाज की सुरक्षा और व्यवस्था प्रभावित न हो। इसी संतुलन को लोकतंत्र का आधार माना जाता है। बंधुत्व, जो कि भारतीय समाज की विशिष्टता है, संविधान का अनिवार्य स्तंभ है। विविधताओं से भरे इस देश में बंधुत्व ही वह सूत्र है जो विभिन्न धर्मों, भाषाओं, संस्कृतियों और क्षेत्रों के लोगों को एकता की डोर में बाँधता है। संविधान ने एकल नागरिकता, मौलिक कर्तव्यों और सार्वभौमिक मताधिकार जैसी व्यवस्थाओं के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया है। इन कर्तव्यों में देश के प्रति निष्ठा, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना और राष्ट्रीय एकता बनाए रखना ऐसे तत्व हैं जो नागरिकों के भीतर जिम्मेदारी की भावना को जागृत करते हैं। संविधान भारत की भौगोलिक और राजनीतिक संरचना को भी स्पष्ट करता है। अनुच्छेद 1 में भारत को ''राज्यों का संघ'' कहा गया है, जो यह दर्शाता है कि भारत की एकता किसी एक जाति, धर्म, भाषा या संस्कृति के कारण नहीं, बल्कि बहुलता के आदर पर आधारित है। संविधान ने केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों का संतुलित वितरण किया है ताकि दोनों स्तरों पर शासन सुचारु रूप से चल सके। सातवीं अनुसूची की तीन सूचियाँ–केंद्रीय, राज्य और

समवर्ती विषय—यह निश्चित करती हैं कि कौन सा विषय किस सरकार के अधिकार क्षेत्र में आएगा। वित्तीय, प्रशासनिक और विधायी संबंधों का यह सुनियोजित ढाँचा भारत की संघात्मक प्रणाली को मजबूत करता है। संसदीय प्रणाली भारत के लोकतंत्र की रीढ़ है। यहाँ कार्यपालिका, अर्थात प्रधानमंत्री और मंत्री परिषद, संसद के प्रति उत्तरदायी होती है। यह व्यवस्था जनता की आवाज को शासन में सीधे शामिल करती है। निचला सदन, यानी लोकसभा, सरकार को अविश्वास प्रस्ताव द्वारा हटाने की शक्ति रखता है, जिससे जनता का शासन पर निरंतर नियंत्रण बना रहता है। मौलिक अधिकारों के साथ संविधान ने नागरिकों को कर्तव्यों का भी बोध कराया है। अधिकारों की रक्षा के लिए अनुच्छेद 23 को विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना गया है, जिसे डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने संविधान की ''आत्मा'' कहा। यह नागरिकों को यह अधिकार देता है कि यदि उनके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन हो तो वे सीधे सर्वोच्च न्यायालय जा सकते हैं। लेकिन अधिकार तभी सार्थक होते हैं जब नागरिक अपने दायित्वों को भी समझें। इसी उद्देश्य से 42वें संशोधन के द्वारा नागरिकों के मौलिक कर्तव्य संविधान में जोड़े गए। न्यायपालिका की स्वतंत्रता संविधान की एक और विशेषता है। सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों को न्यायिक पुनरीक्षण का अधिकार प्राप्त है, जिसके तहत वे किसी भी ऐसे कानून या कृत्य को असंवैधानिक घोषित कर सकते हैं जो संविधान के विरुद्ध हो। यह व्यवस्था नागरिकों को मनमानी शासन से सुरक्षा प्रदान करती है और लोकतंत्र में शक्ति के संतुलन को बनाए रखती है। चुनावों की निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए संविधान ने स्वतंत्र निर्वाचन आयोग की स्थापना की है। यह आयोग न केवल चुनावों का संचालन करता है बल्कि आचार संहिता लागू करके सत्ता में बैठी सरकार की शक्तियों को भी नियंत्रित करता है, जिससे चुनाव स्वतंत्र व निष्पक्ष रह सकें। इस कारण भारतीय लोकतंत्र विश्व में अत्यंत विश्वसनीय माना जाता है। इन समस्त विशेषताओं के बावजूद संविधान पर कुछ आलोचनाएँ भी की गई हैं। इसे अत्यधिक लंबा माना गया है, इसकी भाषा विधिक और कभी—कभी जटिल प्रतीत होती है। कई अवधारणाओं की परिभाषा स्पष्ट नहीं है, जैसे ''अल्पसंख्यक'' की परिभाषा। इसके अतिरिक्त, इसके बहुत से हिस्से ब्रिटेन, आयरलैंड, अमेरिका और कनाडा जैसे देशों के संविधानों से लिए गए हैं, जिसके चलते कुछ लोग इसे ''उधार का संविधान'' भी कहते हैं। फिर भी, इन आलोचनाओं के बावजूद भारतीय संविधान की सबसे बड़ी सफलता यह है कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी भारतीय जनता का इस पर विश्वास बरकरार है और लोकतंत्र लगातार मजबूत होता जा रहा है। भारतीय संविधान केवल कानूनों का एक संग्रह नहीं, बल्कि एक जीवित दस्तावेज है, जो समय और परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को रूपांतरित कर सकता है। यही कारण है कि यह आज भी दुनिया के सबसे प्रभावी और जीवंत संविधानों में गिना जाता है।

(लेखकः दारुल उलूम नदवतुल उलमा के छात्र हैं)

❖❖❖

सर्दी की हेल्दी सौगात

डॉ0 लोकेश के0 भारती

सर्दी के मौसम में सही तरीके से, सही चीजें और सही मात्रा में खा लें तो यह सिक्योर्ड इन्वेस्टमेंट शरीर को अगली सर्दी तक फायदा देता है। इस मुद्दे पर आयुर्वेद और मॉडर्न मेडिसिन के एक्सपर्ट्स भी अमूमन एक ही राय रखते हैं। असल में सर्दियों में हमारे पेट की अग्नि यानी पाचनशक्ति बेहतरीन होती है। इन दिनों मिलने वाली कुछ खास चीजें हैं जिन्हें खाएं तो एक तरफ जहां खून की मात्रा बढ़ती है, दूसरी ओर इम्यूनिटी भी पावरफुल होती है। इन दिनों कौन–सी सब्जी, कौन–सा फल खाना सबसे बढ़िया है? क्या–क्या जरूर खाएं? आइये एक्सपर्ट्स से समझते हैं।

पालक, बथुआ, मेथी हैं गुडलकः–

ताजा पालक तो अच्छा है ही, इस मौसम में बथुआ, मेथी, सोया (कुछ जगहों पर सुआ बोला जाता है), सरसों साग और इनके अलावा भी कई तरह के साग मिलते हैं। ये सभी विटामिन्स, मिनरल्स, फाइबर्स और ऐंटिऑक्सिडेंट के भंडार हैं। पालक समेत सभी साग में फोलेट नामक ऐसा तत्व पाया जाता है जो शरीर में नई कोशिकाएं बनाने के साथ कोशिकाओं में मौजूद डीएनए की मरम्मत का भी काम करता है। फाइबर, आयरन, विटामिन–C शरीर को हर तरह से स्वस्थ बनाए रखता है।

o ये आयरन, कैल्शियम, फोलेट, और विटामिन K,C,A के सोर्स हैं और खून बनाने में भी मददगार हैं। साथ ही साग इम्यूनिटी भी बढ़ाते हैं। मेथी खासतौर पर शुगर को सही रखने में मददगार हैं।

o मेथी और सरसों के साग स्वभाव से उष्ण और कटु रस वाले होते हैं। शरीर को आंतरिक गर्माहट देते हैं और पाचन अग्नि को उत्तेजित करते हैं।

मूली सस्ती भी, अच्छी भीः–

o मूली हमारे कई अंगों और सिस्टम को मजबूत बनाती है। मूली में भरपूर मात्रा में वॉटर, फाइबर, विटामिन–C फोलेट, पोटैशियम और कई तरह के ऐंटिऑक्सिडेंट होते हैं जो शरीर को अंदर से साफ करने और पाचन बेहतर बनाने में भूमिका निभाते हैं।

o सबसे बड़ा फायदा हमारे डाइजेस्टिव सिस्टम को होता है। मूली में मौजूद फाइबर कब्ज दूर करता है, गैस कम करता है और पेट को हल्का रखता है।

o यह लिवर और गॉलब्लैडर को भी हेल्प करती है। इसमें मौजूद एंजाइम बाइल बनाने में मददगार है।

o यह शरीर को डिटॉक्स करने में भी मददगार है। किडनी को भी मूली फायदा पहुंचाती है।

o मूली खाने से डकार की परेशानी हो तो अजवाइन, काला नमक आदि भी थोड़ी मात्रा में खा लें।

o यह दिल के लिए भी फायदेमंद है। इसमें मौजूद पोटैशियम बीपी को काबू में रखने में मददगार है। वहीं, ***विटामिन– C की अच्छी मात्रा होने से मूली इम्यून सिस्टम को मजबूत करती है।***

फल जरूर खाएंः–

इस मौसम में कई तरह के फल मिलते हैं। मसलनः अमरूद, सेब, संतरा, कीनू, अनार आदि। इनमें से हर दिन कोई एक फल भी खा लें तो कई परेशानियां खत्म हो जाएंगी। अमरूद और सेब तो ऐसे फल हैं जिन्हें सुबह खाली पेट भी खा सकते हैं। इनके अलावा आजकल शरीफा (कस्टर्ड ऐपल) भी काफी मिलता है।

कीनू, माल्टा और संतरे में क्या फर्क?ः–

अक्सर लोग कीनू, माल्टा और संतरे में फर्क नहीं कर पाते। जहां तक खाने के बाद मिलने वाले पोषण की बात है तो तीनों फलों में कोई खास फर्क नहीं होता। संतरा और माल्टा जहां कुदरती फल हैं यानी इन्हें कुदरत ने खुद विकसित किया है, वहीं कीनू का विकास अमेरिका के कैलिफोर्निया में 1935 में किया गया था। इसे विलो लीफ मैंडरिन और किंग नामक दो फलों के मिश्रण से बनाया गया है। बाद में यह पंजाब, हरियाणा जैसे राज्यों में उगाया जाने लगा।

क्यों खाना चाहिएः–

ये तीनों फल विटामिन–C, ऐंटिऑक्सिडेंट और फाइबर के बेहतरीन सोर्स हैं। इम्यूनिटी की मजबूती की बात हो या फिर शरीर में हीमोग्लोबिन के उत्पादन की, ऐसे कई कामों के लिए ये बेहतरीन विकल्प हैं।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू अब्दुर्रहमान नदवी

कपड़ों के बाद इन्सान भी होंगे मशीन में साफ!
जापान की तीन करोड़ वाली ह्यूमन वाशिंग मशीन ने मचाया धमाल

जापान अपने अजीबो–गरीब लेकिन कमाल के इनोवेशन के लिए हमेशा से मशहूर रहा है। सोशल मीडिया पर अक्सर ऐसे वीडियो दिख जाते हैं, जिन्हें देखकर लोग दंग रह जाते हैं। इस बार भी एक ऐसा ही वीडियो चर्चा में है, जिसमें दिखाया गया है ह्यूमन वॉशिंग मशीन यानी इंसान को धोने वाली मशीन। नाम जितना अनोखा है, इसका काम उतना ही दिलचस्प है। देखने में यह कोई फ्यूचरिस्टिक पॉड जैसा लगता है जिसमें इंसान लेटता है और पूरा नहाने–धोने का चक्कर मशीन खुद संभाल लेती है। तो आइए विस्तार से जानते हैं।

इस मशीन को जापान की साइन्स नाम की कम्पनी ने बनाया है। खास बात यह है कि इसके अंदर कोई घूमने वाला ड्रम या ऐसा हिस्सा नहीं है जो यूजर को नुकसान पहुँचा सके। इन्सान बस पॉड के अंदर लेटता है, ढक्कन बंद करता है और फिर पूरा प्रोसेस ऑटोमैटिकली शुरू हो जाता है। इसके दौरान बैकग्राउंड में हल्का–फुल्का संगीत बजता रहता है, ताकि अंदर मौजूद व्यक्ति को रिलैक्स महसूस हो। इसका आइडिया कोई नया नहीं है। 1970 के ओसाका वर्ल्ड एक्सपो में इसी कॉन्सेप्ट का शुरुआती मॉडल दिखाया गया था। कम्पनी के संस्थापक यासुआकी आओयामा इसी मशीन को बचपन में देख कर इतने प्रभावित हुए थे कि आगे चलकर इसे असली प्रोडक्ट बनाने का सपना देखा। बाद में जब उनकी बेटी को त्वचा से जुड़ी समस्या हुई, तब उन्होंने ऐसा तरीका खोजने की कोशिश शुरू की जिसमें शरीर को बिना रगड़े साफ़ किया जा सके। इसी खोज ने उन्हें छोटे बुलबुले यानी अल्ट्रा–फाइन बबल्स की तकनीक तक पहुँचाया, जो इस मशीन में इस्तेमाल होती है।

वायरल वीडियो इंस्टाग्राम पर *@technology* नाम के अकाउंट से शेयर किया गया है। इसमें दिखाया गया है कि जैसे ही कोई पॉड में प्रवेश करता है, सिस्टम एक्टिव हो जाता है। पहले अन्दर हल्का पानी और साबुन छोड़ा जाता है, फिर मशीन माइक्रो–बबल्स की मदद से सफाई की प्रक्रिया शुरू करती है। ये बेहद छोटे–छोटे बुलबुले त्वचा की गंदगी को धीरे–धीरे हटाते हैं, जिससे स्किन पर कोई रगड़ या जलन नहीं होती। इसके बाद मशीन व्यक्ति को पूरी तरह सुखा भी देती है। पूरा प्रोसेस ख़त्म होने के बाद पॉड का दरवाज़ा अपने आप खुल जाता है और यूजर साफ–सुथरा और फ्रेश महसूस करते हुए बाहर निकल सकता है। वीडियो पर लोगों की प्रतिक्रिया भी मजेदार है। किसी ने इसे ''जेटसन–स्टाइल बाथ'' कहा, तो किसी ने मज़ाक में लिखा कि इसे ''फाइनल डेस्टिनेशन'' फिल्म का हिस्सा बना देना चाहिए। कई यूजर्स ने इसे बुजुर्गों और कम चल–फिर पाने वाले लोगों के लिए बेहद उपयोगी बताया। वहीं कुछ लोग इस पॉड के अंदर बंद होने और पानी से भर जाने के विचार से डरे भी नज़र आए।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۔ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांकः **22/12/2025** तاریخ ________

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक़्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़—ए—जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए। आमीन।

मौलाना सैयद अम्मार अब्दुल अली हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा

SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW- IFSC: SBIN0000125
ONLINE DONATION LINK: https://www.nadwa.in/donation

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

ZAKAT	ATIYA	BUILDING
NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA	NADWATUL ULAMA

UPI करते समय रिमार्क में मद (ज़कात/अतिया/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा—ए—करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं08736833376 पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को Section 80G income Tax act 1961के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 24 - Issue 11

Whatsapp & Call 9559844716
Office Timing : 08:00 AM To 1:00PM
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3